फरवरी-2014 ◆ वर्ष 2 ◆ अंक 9 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

फरवरी-२०१४

चल उड़ जा
रे पंछी,
लेके ये संदेश
सत्यार्थप्रकाश
की शिक्षा
फैला दें देश-विदेश

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० २६

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
Chunky Chat
masala
MDH
Garam
masala
MDH
Sambhar
masala
MDH
Shahi Paneer
masala
MDH
DEGGI MIRCH
MDH
Kitchen
King
MDH
Peacock
Kasoori
Methi
MDH
Pav Bhaji
masala
MDH
Dal Makhani
masala
MDH
Chana
masala
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११४
माघशुक्ल अष्टमी
विक्रम संवत्
२०७०
दयानन्दाब्द
१८९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

११ वेद-बाँसुरी →

← सत्यार्थ प्रकाश पहेली हल करें और पुरस्कार जीतें १०

February - 2014

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २०

हलचल २१

०४ वेद सुधा
०६ ये उत्थान है या पतन हो रहा है?
०८ दान
१३ प्रकटी एक आशा की किरण
१४ तीन बातें सदा याद रखें
१५ मधुर जीवन के मूल मंत्र
१८ पुजारियों की चाँदी
२२ ६, ९,११
२५ मोदी की पगड़ी में सुरखाब का पंख
२६ कथा सरित
२७ दयानन्दीय शिक्षा नीति
२८ उल्लास और उदासी ऐसी है बीमारी
२९ जीवन भर साथ निभाने की कसमें

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - २ अंक - ९

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ९३१४५३५३७९, ९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

अहिंसा के भेद

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति।। -यजु. ४०/६

गतांक से आगे ....

अहिंसा-व्रत के पालन से साधक मोक्षमार्ग का पथिक तभी बन सकता है जब वह योगाभ्यास के द्वारा प्राणिमात्र में परमात्मा की अनुभूति करता है एवं परमात्मा में ही सब जड़-चेतनादि को समझता है। ऐसे सम्यक् दर्शन से उसे किसी प्रकार का सन्देह नहीं रहता। वह सुख-दुःख, हानि-लाभ में अपने आत्मा के समान सब प्राणियों को देखता हुआ धार्मिक वृत्ति से मोक्ष को प्राप्त होता है।

वैदिक संहिताओं में अहिंसा अथवा हिंसा के अनेक स्वरूप हैं, उनको प्रमुख रूप से बाह्य तथा आभ्यन्तर दो भेदों में विभक्त कर सकते हैं। शारीरिक अंगों से हिंसा न करना बाह्य अहिंसा एवं आन्तरिक साधन वाणी तथा मानसिक विचारों से कटुभाषण या विद्वेष न करना आभ्यन्तर अहिंसा है। वेदों में मन, वाणी एवं शरीर तीनों से ही अहिंसा-पालन के निर्देश मिलते हैं। संक्षेप से यहाँ अनुशीलन किया गया है।

मानसिक अहिंसा

यत्र विजायते यमिन्युपर्तुः सा पशून्क्षिणाति रिफती रुशती॥ -अथर्व. ३/२८/१

मननात्मक शक्ति बुद्धि के विकृत होने पर तामसिक गुण की अधिकता से मनुष्य हिंसा में प्रवृत्त होता है और शस्त्राघात या अन्य साधनों से मनुष्यों तथा पशुओं को नष्ट करना चाहता है। ऐसे अनिष्ट चिन्तक को श्रुति में 'दुर्मतिः' 'दुर्हादः' अर्थात् 'दुष्टमतिवाला', 'दुष्टहृदयवाला', दुरात्मा कहा गया है।

रिष्टं न यामन्नप भूतु दुर्मतिर्विश्वाप भूतु दुर्मतिः। -ऋग्. १/१३१/७

दुर्हादः=दुष्टात्मा-अथ. १४/२/२६; (सं. विधि गृहा. प्र. पृ. २१६)

इसी प्रकार ज्ञान के द्वेषी को **'ब्रह्मद्विषः'** एवं द्रोही के लिए **'द्रुहः'** पद का प्रयोग है। इन शब्दों का सम्बन्ध मानसिक हिंसा से है। मानसिक हिंसा में संलग्न मनुष्य निश्चिन्त, शान्त नहीं रह सकता इसीलिए उपासक वेद के शब्दों में प्रार्थना करता है कि 'हे प्रभु! सुमनस्कता और दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए हम सदैव विद्वानों की संगति करते रहें।

यजामहे सौमनसाय देवान्। -ऋग्. १/७६/२

राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे। इयं विप्रा मेधसातये॥ -ऋग्. ७/६६/८

विद्वानों का कर्तव्य है कि वे अहिंसा से पूर्ण कार्यों की रक्षा करें एवं परस्पर प्रीति बढ़ाकर अहिंसा-धर्म की वृद्धि करें।' विद्वानों के लिए वेद का आदेश है कि 'विद्वान् ऐसी बुद्धि को उत्पन्न करें जिससे समाज में बल की वृद्धि तथा योग कर्मों में प्रगति हो सके।' मानसिक अहिंसा का पालन सर्वोपरि कठिन है, अतः वैदिक साधनासेवी अहिंसा के अनुकूल व्यवहार करे, इसका पालन बड़ी गम्भीरता से करे।

वाचिक अहिंसा

जो व्यक्ति कठोर भाषण के द्वारा दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं या वाणी द्वारा द्रोह प्रकट करते हैं, वेद में उन्हें 'द्रोघवाचः कहा गया है।

द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं सचन्ताम्। -अथर्व. ८/४/१४; सातवेलकर

इसे हम वाचिक हिंसा कह सकते हैं। 'जो असत्य वचनों से दूसरों को धमकाता, झिड़कता है और अहिंसक को हिंसक कहता है, अपने को सत्यवादी एवं धर्मात्मा सिद्ध करता है, सर्वज्ञ परमात्मा उसकी आत्मा निर्बल करता है, असत्य बोलकर या गाली देनेवालों के लिए प्रजारक्षक राजा दण्ड-विधान करे। वाचिक अहिंसा के साधक को आवश्यक है कि- स्तुति करनेवाली, उपदेश द्वारा ज्ञान प्रदान करनेवाली तथा इडा, सरस्वती और मही तीन अहिंसनीय वाणियों को सदा प्राप्त करे।

इळा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः। बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः॥ -ऋग्. १/१३/९

अहिंसाव्रत के पालक ऐसा संयम करें जिससे दिव्यगुणयुक्त महात्माओं के सम्मुख प्रतिज्ञापूर्वक घोषणा कर सकें कि- 'भगवन्! न तो हम हिंसा करते, न घात-पात करते हैं, न ही वाग्व्यवहार से परस्पर विरोध करते हैं, मन्त्र के अनुसार आचरण करते

हुए, तिनकों के समान तुच्छ निर्बल साथियों के साथ भी एकमत होकर, मिलकर वेगपूर्वक कार्य करते हैं।

नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।
पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि सं रभामहे॥ -ऋग्. १०/१३४/७

उपासना-काल में किसी की हिंसा करनेवाली प्रार्थना भी न करे। परमेश्वर के समीप उपस्थित होकर उन्हीं अहिंसाजनक स्तुति-प्रार्थना क्रियाओं द्वारा व्रत-पालन का संकल्प ले जो सत्य सिद्ध हों।

उपासक, परिवार में रहकर किस प्रकार वाचिक-अहिंसा का आचरण करें, इसका सुन्दर परिशीलन अथर्ववेद में किया गया है। सर्वप्रथम पति-पत्नी पारस्परिक सम्भाषण में मधुसदृश मधुर और शान्तिदायक वाणी बोलें। पुत्र माता-पिता के साथ अनुकूल मनवाले होकर वर्तनेवाले हों। भाई-भाई आपस में द्वेष न करें, बहिन-बहिन आपस में द्वेष न करें। इसी प्रकार बहिन- भाई भी अहिंसाव्रत का पालन कर सदैव मीठी एवं कल्याणकारिणी वाणी बोलें।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवान्॥ -अथर्व. ३/३०/२
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वासारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदते भद्रया॥ -अथर्व. ३/३०/३

जिस प्रकार विद्वान् योगी पुरुष आपस में द्वेष नहीं करते, उसी प्रकार घर के सभी सदस्यों का प्रेम-पूर्ण व्यवहार हो। सभी अपनों से बड़ों का आदर करें, एकमन होकर रहें, कभी पृथक् न हों, मिलकर संसिद्धि का यत्न करें, एकमन आधार बनाकर आचरण करें, एक-दूसरे के प्रति सरल, मीठा, प्रेमपूर्वक बोलें। इस तरह साथ-साथ उद्योग करनेवालों को परमात्मा एकमन वाले तथा समनस्कता से युक्त करता है।

शारीरिक अहिंसा

जो मन और वाणी से हिंसा के भाव निकाल देगा वह शारीरिक हिंसा नहीं कर सकता। वेदों में मन-वाणी से अहिंसाव्रत के साथ ही शारीरिक अहिंसा-पालन के विशेष निर्देश उपलब्ध होते हैं। ईर्ष्या-द्वेष, लोभ आदि के वशीभूत हो किसी को शारीरिक कष्ट देना, अंग-भंग करना या प्राणहरण कर लेना शारीरिक हिंसा का क्षेत्र है, इसके त्याग को शारीरिक अहिंसा कहा गया है।

शारीरिक हिंसकों के लिए वेदमन्त्रों में **'अत्रिणः, 'रिपुः रिषः, एवं हस्तघ्नः'** आदि शब्दों के प्रयोग मिलते हैं। ऐसे शारीरिक हिंसकों को दण्ड देने तथा शरीर से दुर्बल कर देने का विधान वेदों में किया गया है। शारीरिक अहिंसा-व्रत की पालना में शारीरिक हिंसा का निषेध किया है कि प्रजाओं को शरीर के द्वारा कोई न मारे। साधक स्वयं शारीरिक कष्ट नहीं देता, वरन् कष्ट देनेवालों के प्रति प्रभु से प्रार्थना करता है कि- हे परमेश्वर! ये सभी हिंसक मनुष्य हमारे शत्रु बनकर वैर-भाव न रखें तथा हमारे शरीरों का नाश न करें।अपितु हम परस्पर मैत्री का व्यवहार करते रहें। अहिंसा दोनों पक्षों से स्थिर होती है। वेद का स्पष्ट आदेश है कि साधक न कभी दूसरों से हिंसित हो, न स्वयं दूसरों की हिंसा करे, किसी स्थान विशेष पर भी हिंसा न करें। अहिंसा के कार्यों में ही विद्वानों का सहयोग माँगे।

उक्त परिशीलन से स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक साधना में शारिरीक, वाचिक तथा मानसिक तीनों प्रकार की अहिंसायुक्त क्रियाओं की आवश्यकता है।

- डॉ. योगेन्द्र पुरुषार्थी

आत्म निवेदन
ये उत्थान है या पतन हो रहा है?

अनेक लोग इस शीर्षक को ही बेमानी मानेंगे। सर्वत्र उत्थान ही तो नजर आ रहा है। मंगल ग्रह पर दुनिया बसाने की स्थिति आने वाली है तो उनका यही कथन होगा कि ऐसी स्थिति में पतन की बात करना ही बेमानी है। तकनीक ने अकल्पनीय ऊँचाई मानव जीवन को दी है। परन्तु हमारा कहना है कि मानवीय मूल्यों का ऐसा भीषण पतन इस काल में हुआ है कि रावण और कंस तो सज्जन प्रतीत हो रहे हैं। इस यात्रा की आधार रेखा है- शीघ्रातिशीघ्र धन, दौलत सत्ता प्राप्त करो और फिर इसके बलबूते पर नैतिक-अनैतिक इच्छाओं की पूर्ति करो। क्या धर्मगुरु, क्या राजनेता, क्या मीडिया के पहरुए, क्या उच्चतम पदों पर आसीन न्यायाधीश, क्या शिक्षक, क्या धन्नासेठ कोई भी तो नही बचा है। सत्ता का उपयोग कर वासना-पूर्ति का खेल सर्वाधिक दृष्टिगत् हो रहा है। हालात का विश्लेषण कर एक बात और समझ में आती है कि अधिकांश मामलों में शिकारी और शिकार दोनों ही अपना-अपना हित साध रहे थे। शिकारी लालच के जाल में शिकार को फाँस रहा था तो शिकार भी हालात से अनभिज्ञ नहीं था। उदाहरण के तौर पर लम्बी फेहरिस्त में से तीन-चार प्रकरण लेते हैं। राजस्थान में एक ए.एन.एम. भँवरी देवी के सम्बन्ध राज्य के बड़े ही प्रभावशाली नेता से थे। राजनेता की कामवासना तृप्त हो रही थी तो क्या भँवरी स्थिति का लाभ नहीं ले रही थी? बिल्कुल ले रही थी। इसीलिए समय पर काम आवे इस हेतु सी.डी. बना रखी थी ताकि नेता को ब्लैकमेल कर सके। नर्स की अति महत्वाकांक्षा और संभवतः ऊबने के कारण नेताजी दूरी बनाने लगे। सी.डी. उजागर करने की धमकी-परिणामतः हत्या।

R.T.I. Activist शहला मसूद हत्याकाण्ड त्रिकोणीय सम्बन्धों का गोरखधन्धा। अत्यन्त ताकतवर नेता का पुत्र। शहला मसूद से अन्तरंगतम सम्बन्ध। स्वेच्छापूर्वक सब कुछ ठीक ठाक। महत्वाकांक्षा तथा पुरुष पर एकाधिकार की चेष्टा। हसद, जलन नतीजा- हत्या। वही सब कुछ। वैसा का वैसा। क्या शहला को पता नहीं था कि जिससे वह सम्बन्ध बना रही है वह पूर्व से ही विवाहित था, उसके सम्बन्ध जाहिदा नामक अन्य महिला से भी थे। विशेष बात यह है कि जाहिदा भी भोपाल के अतीव धनाढ्य बोहरा परिवार की बहू थी। यही शहला एक अन्य नेता से भी सम्बन्ध बनाए हुए थी। यह ध्यान रखें कि नेताजी ने शहला तथा जाहिदा दोनों को अपने पद का लाभ लेते हुए व्यावसायिक अनुबन्ध दिए थे। तो क्या सत्ता से नजदीकी बढ़ा धन-दौलत सत्ता प्राप्त करना शहला के मानस में नहीं रहा?

गीतिका आत्महत्या कांड हरयाणा का एक मंत्री- गोपाल कांडा। सामन्तों जैसा जीवन। सब कुछ खरीद लेने का दम्भ। खुलासे के अनुसार अनेक महिलाओं पर तथाकथित उपकार। गीतिका भी उनमें से एक। २१-२२ वर्ष की गीतिका ने क्या यह कभी नहीं विचारा कि एक बड़ी कम्पनी की निदेशक बनने हेतु वही क्यों? क्या थी योग्यता व मानदण्ड। स्पष्ट है दोनों पक्ष अपना हित साध रहे थे। देना भी था लेना भी था। फिर वही कहानी। एकाधिकार की चाहत। हमेशा महिला के ही हिस्से में आने वाली वेदना। आत्महत्या की कोशिश से मामले का खुलासा। मध्यमवर्गीय परिवेश में गीतिका को मिली सहानुभूति के स्थान पर प्रताड़ना। नतीजा गम्भीर-आत्महत्या। यही कहानी चाँद-फिजा के किस्से में फिजा की।

आसाराम पर काफी लिखा। बेटा दो कदम आगे-रासलीलाओं का आयोजन-समूहबद्ध काम। क्या यह सब जोर जबर्दस्ती से सम्भव है? कदापि नहीं। सबकी अपनी-अपनी अभिलाषाएँ। सभंव है कुछ शिकार इन धूर्तों द्वारा बहकाने पर मोक्षाभिलाषी हों और कुछ धन की।

उपरोक्त स्थितियों में मानसिक व शारीरिक शोषण पीड़िता का ही होता है। पर ये घटनाएँ पुरुष व स्त्री दोनों को ही संदेश देती हैं और वह संदेश है- मर्यादा पालन का। आज नहीं तो कल ऐसे कृत्यों का खुलासा होता ही है और परिणाम यही होता है।

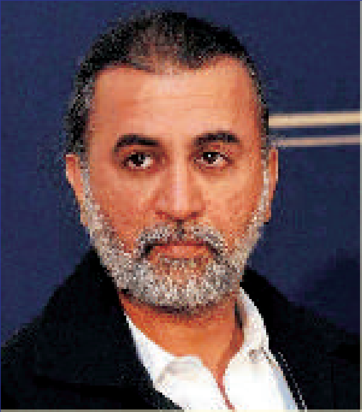

तरुण तेजपाल का प्रकरण एक और चिन्ता पैदा कर रहा है। तरुण की पहचान एक निर्भीक और ईमानदार मीडियाकर्मी की थी। उसने स्टिंग ऑपरेशन कर-करके ताकतवर लोगों के सिरदर्द पैदा कर दिया था और आमजनों की नजर में खुद के लिए एक ऊँचा स्थान। पर वे उतना ही नीचे गिरे हैं। अपने मित्र की बेटी, पुत्री की सहेली, खुद को Mentor मानने वाली शिष्या-किसी सम्बन्ध का ख्याल न किया। वस्तुतः सत्ता, अंहकार और लालसा का सम्मिश्रण फिसलन भरी पट्टी बनता ही है। अतीव खतरनाक है यह काकटेल। यह भी आशंका है कि इसी सत्ता, जो उसकी लालसा पूरी कर सके, को पाने हेतु तरुण ने अपनी तथाकथित ईमानदारी, स्वच्छ छवि, व स्टिंग करने में की गई मेहनत को निवेश के रूप में प्रयोग किया।

जस्टिस गांगुली द्वारा किया गया कृत्य तो एक भारी चिन्ता पैदा करता है। उम्र और पद के लिहाज से वे जहाँ खड़े हैं वहाँ यह पतन समाज शास्त्रियों के लिए चुनौती है। इसी क्रम में एक प्रोफेसर द्वारा शिक्षिका के शारीरिक शोषण को देखा जावेगा, क्योंकि ये उस श्रेणी से हैं, जिन पर राष्ट्र-निर्माण का दायित्व है। कबूतर की तरह आँख बन्द करने से कुछ नहीं होगा। साफ दिख रहा है कि स्वतंत्रता, सहमति, निजता, स्वेच्छा आदि की पश्चिमी व्याख्या तथा स्वयंम्भू समाज-चिन्तकों द्वारा देश को जो दिशा दी जा रही है उसका यही अंजाम होगा, आप रोक नहीं सकते।

क्या आश्चर्य की बात है कि यह उस यतिवर लक्ष्मण का देश है जो सीता माता के आभूषणों में से कुण्डल, कवच, कंगन इस कारण नहीं पहचान पाये थे क्योंकि उन्होंने सीता माता को कभी नजर भरकर नहीं देखा था। हाँ 'नूपुर' उन्होंने अवश्य पहचान लिए क्योंकि वे सीता जी के नित्य चरण स्पर्श करते थे। परन्तु आज जब ऐसी बातें की जाती हैं तो उसे पौंगा पण्डित माना जाता है। प्रगतिशील वह है जो सभी मर्यादाओं को छिन्न-भिन्न करने में विश्वास रखता हो। एक तथाकथित प्रगतिशील पत्रिका पोर्नोग्राफी के संदर्भ में भारतीय नारी की पीठ थपथपाती है कि पोर्नोग्राफी के आलोक (?) में वह सेक्स को नए नजरिए से समझने का प्रयास कर रही है। एक प्रसिद्ध पत्रिका जो शायद प्रतिवर्ष भारतीय युवाओं की यौन रुचियों का सर्वेक्षण करने का दावा करती है उसका निष्कर्ष है कि महानगरों में ही नहीं छोटे शहरों में भी 'काम' का सम्राज्य दिनों-दिन उन्नति पर है। पर वे विवाहपूर्व बढ़ रहे सम्बन्धों को भारतीय प्रगति के रूप में विशेषकर नारी की उन्नति के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार नारी मुखर हो रही है, मुक्त हो रही है। दुर्भाग्य यह है कि एक समाचार के अनुसार चैन्नई के कुछ स्कूलों ने अपने परिसर में 'कन्डोम बैंडिग मशीन' लगायी है। रोंगटे खड़े हो जाते हैं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर समाज की इस दशा और दिशा को देखकर। किसी समाज के चरित्र का परिचायक उसके रोल मॉडल होते हैं। आज कौन रोल मॉडल है? जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने में अपने जीवन-पुष्प न्यौछावर कर दिए आज की पीढ़ी के समक्ष उनका क्या महत्व है? आज के चरित्र नियामकों ने पसन्द ही बदल डाली। आज की जीवन कसौटियों को मानें तो फिर लक्ष्मीबाई मूर्ख ही थीं। उन्हें जितनी पेंशन अंग्रेज सरकार दे रही थी वे ऐशो आराम के साथ जीवन व्यतीत कर सकती थीं। प्राणोत्सर्ग की क्या जरूरत थी?

आपको आज के रोल मॉडल्स के बारे में जानना है तो रानी लक्ष्मी बाई व तथाकथित पार्न इण्डस्ट्री से आयी तारिका का नाम 'फेस बुक' पर डालें। लाइक्स की संख्या में अन्तर आपको, हम किस दिशा में जा रहे हैं निर्विवादरूप से बता देगा। अब निश्चय कीजिए कि उत्थान हो रहा है या पतन। अभी भी समय है अपनी संस्कृति का गला न घोट, राष्ट्र जीवन में स्थान देने का पुरुषार्थ करें, अन्यथा विनाश तो अवश्यम्भावी है।

अशोक आर्य
०९००१३३९८३६, ०९३१४२३५१०१

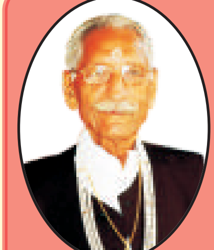

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

मानव मात्र की सेवा ही,
मानव का असली काम।
मानव सेवा के बल पर ही,
इस जग में होता नाम॥

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

- न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

दृष्टिकोण

दान

-ब्रजेन्द्र श्रीवास्तव
प्रसिद्ध लेखक एवं समीक्षक

वह इकतारा गुँजाता और गाता हुआ घर के सामने से निकल रहा था, गायन वादन में लय और ताल के साथ स्वर में अक्खड़पना होते हुए भी कर्णप्रियता थी। इसलिए बगीचे में काम करते-करते रुक गया। ध्यान देकर सुनाः

सबद निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी,
उठत-बैठत कबहुँ न छूटै ऐसी तारी लागी।

सोचा यह कबीर की साखी लगती है। आगे उसने गाया- कहै कबीर यह उनमुनि रहनी......... तो सहसा निर्गुण कबीर को साकार करने वाले कुमार गन्धर्व याद आ गए। वाह! इसे कुछ दिया जाए- बीस रुपये, घर के भीतर गया सोचा बीस बहुत हैं दस ठीक हैं, कहीं रोज-रोज आ खड़ा हुआ तो? और जब उसके दान पात्र में डाला तो वह था पाँच रुपए का सिक्का। ऐसा क्यों हुआ कि बीस रु. का विचार पाँच रुपए में पूरा हुआ? पर ऐसा अक्सर ही होता है। मैं शर्त तो नहीं लगाता पर बहुत संभव है, आपके साथ भी ऐसा होता होगा कि किसी याचक को देखकर जितनी वस्तु, अन्न या पैसा आप देने का विचार एकदम से करते हैं उसमें दान देते-देते कमी आ ही जाती है। दान में बढ़ोतरी कम ही होती है।

दान की तात्कालिक मनोवृत्ति पर कर्ण का एक प्रसंग है जो हमारी दानघटाऊ मनोवृत्ति की पुष्टि करता है। एक सुबह कर्ण स्नानपूर्व तेल मर्दन कर रहे थे, बाएँ हाथ में वह स्वर्ण का रत्नजटित तैल पात्र लिए थे और उसमें से तेल लेकर दाएँ हाथ से शरीर में लगा रहे थे। इतने में एक याचक उपस्थित हुआ, कर्ण के समक्ष उस समय कोषाध्यक्ष उपस्थित नहीं था इसलिए कर्ण ने उस याचक को तत्काल तेल से भरा वह स्वर्णपात्र बाएँ हाथ से ही भेंट कर दिया। इस पर याचक ने सविनय यह प्रश्न किया कि- 'हे

दानवीर अंगराज! आप धर्म और सदाचार के ज्ञाता हैं फिर भी आपने बाएँ हाथ से दान कैसे दे दिया? क्योंकि नीति यह कहती है कि समस्त धर्म-कार्य दक्षिण हाथ से ही सम्पन्न करने चाहिए।' इस पर कर्ण ने कहा- 'हे द्विज श्रेष्ठ! बाएँ हाथ में स्वर्णपात्र को दाएँ हाथ से लेने में कुछ समय तो लगता ही, इसी अल्प समय में ही मेरे मन में यह विचार आ सकता था कि रत्नजटित यह स्वर्णपात्र तो बहुमूल्य है, कुछ स्वर्ण मुद्राएँ ही पर्याप्त रहेंगी। दान की सात्विक वृत्ति चित्त में बहुत ही अल्प समय के लिए ठहर पाती है इसलिए मैंने चित्त में सद्वृत्ति के रहते तत्काल दान करना उचित समझा और बाएँ हाथ से ही दान दे दिया है।'

ऐसा क्यों होता है कि अच्छे विचार, दान और परोपकार की भावना, वैर-द्वेष भुलाकर मित्रता का इरादा, दूसरों को क्षमा कर देने की इच्छा एक तरंग की तरह आती है तो दुबारा कम ही लौटती है। मनीषियों ने इसका एक कारण यह माना है कि मन की गति और जल की गति ऊँचे से नीचे की तरफ जाने की होती है। सांख्य दर्शन में जल की प्रकृति सत्व और तम इन दो गुणों का मिश्रण मानी गई है। सत्व गुण उर्ध्वगामी है जबकि तमोगुण अधोगामी। यही कारण है कि हमारा मन थोड़ी देर के लिए ऊँचे परोपकारी विचारों पर जाता तो है पर वहाँ की ऊँचाई से तुरन्त हटकर अपने स्वार्थ के निचले स्तर की तरफ चलने लगता है। ग्रीक दार्शनिकों ने वायु और अग्नि को ऊपर की ओर बढ़ने वाला उर्ध्वमुखी और जल व पृथ्वी को नीचे की तरफ बढ़ने वाला माना है। सुश्रुत ने आयुर्वेद में भी जल को सत्व और तम का मिश्रण माना है इसलिए मनुष्य का मनःशरीर रचना की दृष्टि से मन की वृत्ति या तौर-तरीका अच्छे विचारों से हटकर निकृष्ट विचारों की तरफ सहज ही जाने का रहता है, आधुनिक मनोविज्ञान इस मानसिक प्रवृत्ति को इतने स्पष्ट रूप से अभी डिफाइन नहीं कर पाया है।

प्रयत्न तो मन को ऊँचा उठाने के लिए सद्वृत्तियों की ओर ले जाने के लिए और वहीं बनाए रखने के लिए हमको करना होगा? वही जो हम जल को निचले स्तर से ऊपर के स्तर तक पहुँचाने के लिए करते हैं- हम बिजली की, पानी को ऊपर फेंकने वाली, मोटर अर्थात् बूस्टर पम्प लगाते हैं। अपने मन की वृत्तियों को ऊपर उठाने और उन्हें सतत् उर्ध्वगामी बनाए रखने के लिए हमें अपनी इच्छाशक्ति को संकल्प से उसी तरह जोड़ना होगा जैसे

हम विद्युत शक्ति को जल के पम्प से जोड़ते हैं- हमें अपना मन शुभ संकल्पमय बनाना होगा। यजुर्वेद में जो बार-बार प्रार्थना की गई है- 'मेरा मन शुभ संकल्पवान बने- तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु', वह इसीलिए तो की गई है।

दान में कौन कितना आगे ? दान पर आज विश्वव्यापी सर्वेक्षण हो रहे हैं कि कौन-सा देश कितना धन या समय परोपकार में देता आ रहा है। इसमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से लेकर आम नागरिक, सभी शामिल किए गए हैं। इस सर्वे के अनुसार अमेरिकी कम्पनियाँ और नागरिक दोनों ही, धन व समय परोपकार में लगाने में सबसे आगे हैं। जबकि भारत धर्म आध्यात्म प्रधान होने के दावे के बावजूद दानधर्म के कार्य में बहुत पीछे है। वास्तविकता भी यही है कि भारत में दान पर बहुत जोर धर्मग्रन्थों में तो दिया गया है, पर व्यवहार में दान, परोपकार एक औपचारिकता मात्र दिखाई देता है। भारत में दान, परोपकार की भावना में गिरावट आने का एक बड़ा कारण है यहाँ के धर्म-ध्वज वाहकों का अर्थात् मठ, मंदिर, पुरोहित वर्ग का व्यवहार आचरण एकतरफा होता है। ये सब दान तो खूब लेते हैं, पर दान को समाज को लौटाने में कोई अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते नहीं दिखाई देते। भारत के सर्वाधिक धन सम्पन्न उत्तर व दक्षिण के मंदिरों व मठों का, पीठाधीश्वरों का दान, परोपकार प्राकृतिक आपदा सहायता संबंधी व्यवहार किसी तरह प्रेरक मार्गदर्शक नहीं है। कुछ स्कूल, अस्पताल, धर्मशालाएँ अन्न-क्षेत्र या लंगर चलाना पर्याप्त नहीं है। इलेक्ट्रॉनिक चैनलों पर दर्शकों की यह जिज्ञासा कि जून २०१३ में केदारनाथ उत्तराखण्ड के खण्ड प्रलय में अटूट धन सम्पन्न ऐसे कितने धर्म संस्थानों ने मदद की? आप यह नहीं कह सकते कि जिनका आधार ही दूसरों के दान पर टिका है वे दान क्यों करें? क्योंकि अपार सम्पत्ति जमा होने के कारण ही ऐसे धर्म संस्थानों में उत्तराधिकार या अधिकार को लेकर मुकदमे चलते हैं। आम जनता बड़े लोगों के आचरण के अनुसार ही व्यवहार करती है- 'महाजनो येन गता सः पन्था' जिस मार्ग पर महाजन बड़े लोग चलें वही मार्ग सभी को अनुकरणीय होता है।

गिरधर कविराय ने इसलिए यह सलाह धनिक वर्ग को दी है कि जब घर में पैसा बढ़ जाए तो दोनों हाथों से दान देना चाहिए नहीं तो यह पैसा ले डूबता है। गिरधर कवि राय ने कहा है कि जैसे नाव में पानी भर जाने पर उसमें बैठे लोग पानी को दोनों हाथों से बाहर उलीचते हैं, ताकि नाव डूबे नहीं। उसी तरह धन को दान के माध्यम से बाहर निकालते रहने पर ही अधिक धन से होने वाले दुर्गुणों से बचा जा सकता है।

वर्तमान में दान ही प्रधान धर्म या सामाजिक आचार **(Code of conduct)** है। काल के चार विभाजन सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग धर्म आचरण की बढ़ती घटती स्थिति के आधार पर किए गए हैं। धर्म शब्द से भले ही सेक्यूलरवादी कुछ भी अर्थ निकालें, धर्म का व्यापक अर्थ सामाजिक आचरण ही है। महाभारत में भीम युधिष्ठिर से कहते हैं कि सभी शास्त्रों में आचार को प्रथम स्थान दिया गया है। इस आचार से ही धर्म बनता है। 'सर्वे आगमानाम आचारः प्रथमं परिकल्पते, आचार प्रभवो धर्मो।' इस धर्म आचरण के चार चरण हैं सत्य, यज्ञ, तप और दान। मतान्तर से यह सत्य ज्ञान यज्ञ और दान है। सतयुग में सत्य, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में तप और वर्तमान कलयुग में दान की प्रधानता मानी गई है। इसीलिए सन्त प्रवर तुलसी कहते हैं :-

प्रगट चारिपद धर्म के कलिमह एक प्रधान।
येन केन विधि दीने, दान करे कल्याण।।

दान की सीमा क्या हो ? भागवत कथामर्मज्ञ डोंगरे महाराज ने आय का पाचवाँ भाग दान करने पर जोर दिया है, यह विभाजन उदार और धनी वर्ग के लिए ठीक लगता है। जबकि मनु ने आमदनी का दशमांश दान करने को कहा है। अर्थात् सौ रुपए आय पर १० रुपए। इस्लाम में पूरे साल की आमदनी का एक प्रतिशत जकात अर्थात् दान-पुण्य पर खर्च करने का विधान किया गया है जिसे सभी आसानी से कर सकते हैं। ईसाइयों में भी चैरिटी पर अर्थात् दान पर बहुत जोर दिया गया है। सर्वस्वदान नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आजीविका नष्ट होने से दूसरों के आश्रित रहना पड़ता है, इसलिए श्रीमद्भावगत में इसे मना किया गया है। क्या निर्धन दान करें? निर्धन को दान नहीं करना चाहिए। इसके अलावा जो व्यक्ति अपनी पत्नी, बच्चे और वृद्धजनों का पालन नहीं करते हुए दान करते हैं उन्हें पुण्य के स्थान पर पाप ही मिलता है। व्यवहार में आप समाज में ऐसे बहुत से दानदाता देख सकते हैं जो अपने बीमार माता-पिता को भोजन पानी और दवा देने में झगड़ा करते हैं कि अब तुम्हारा नम्बर है दवा पानी देने का मैं कितना करूँ? फिर अपने स्वयं के बच्चों के लिए मंदिरों में दान करते हैं। इस मनोवृत्ति पर शास्त्र का कथन है कि जो व्यक्ति समर्थ होकर भी अपने स्वजनों को तो दुखी जीवन देता है, उनका पालन पोषण नहीं करता परन्तु परजनदाता बनता है दूसरों को दान देता है ऐसा दान मधु-मिश्रित विष समान अधर्म है।

क्या दान का मुहूर्त देखना चाहिए ? मुहूर्त का अर्थ यदि दान लेने वालों व देने वाले को सर्वाधिक लाभ पहुँचाना है तो आपत्ति के समय धन, अन्न, जल, वस्त्र, औषधि, आश्रय आदि की तत्काल सहायता देना श्रेष्ठ है। ऐसे में पंचांग का मुहूर्त कोई नहीं देखना चाहेगा। जैसे सर्जरी इमरजेन्सी में तत्काल भी की जाती है और योजना बनाकर भी की जाती है वैसे ही दान के संबंध में समझना चाहिए। आपात् समय तत्काल दान के साथ-साथ योजना बनाकर तीर्थ, व्रत, पर्व पर दान करना एक तरह से मुहूर्त या प्रसंगवश दान करना ही है।

दान पर पलने की आलसी प्रवृत्ति– गाँवों में संयुक्त परिवार के दौर में घर के ऐसे संबंधी को जो घर का, बाहर का कुछ भी काम काज नहीं करते, अक्सर, मलूका सा घर में पड़े रहने वाला कहा जाता रहा है। यह मलूका कौन थे? यह थे सन्त मलूकदास जो यह मानते थे कि जो व्यक्ति पूरी तरह ईश्वर पर निर्भर हो जाता है उसकी देखभाल स्वयं राम करते हैं। सन्त मलूकदास कहते हैं

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।

सन्त मलूक ने जब ऐसा कहा होगा तब उनका भाव शरणागति का था पर आलसी लोगों ने दूसरों की उदारता व दान धर्म का लाभ लेने के लिए इसे अपना जीवनमंत्र बना लिया, तो क्या किया जाए। वैसे यह सभी जानते हैं कि कीटपतंग भले ही तनख्वाह वाली चाकरी नहीं करते पर दिनभर भोजन खोजने का श्रम तो करते ही हैं तभी दाता राम उन्हें भोजन देते हैं। दूसरों के दान से पेट भरने की और खुद कुछ न करने की जड़ता देखकर आम आदमी का दान देने को मन ही नहीं करता इसलिए पात्र को ही दान करने का आग्रह किया जाता है।

दान सामाजिक क्षमता बढ़ाने में सहायक– धनी और निर्धन वर्ग के बीच विषमता की खाई या दूरी सदैव से रहती आई है। धनी वर्ग टैक्स के माध्यम से अपना धन गरीब को देने का विरोध करेगा पर यदि उसे पुण्य होने का आश्वासन दिया जाए तो वह दान करने को तैयार हो जाता है। पुण्य एक तरह का बैंक एकाउण्ट है जिसमें दान जमा हो जाता है और 'तुम एक पैसा दोगे वह दस लाख देगा' की तर्ज पर काम करता है। धर्मशास्त्र वस्तुतः सामाजिक आचार व्यवहार में समता व न्याय के उद्देश्य से ही बने हैं इसलिए दान की महिमा बताकर सामाजिक विषमता को कम करने का प्रयास इसमें रहता है। इसलिए दान को अहंकार रहित होकर करने पर भी जोर है।

ऐसी देनी देन ज्यूँ, कित सीखे हो सैन,
ज्यों ज्यों कर ऊँच्यो करो, त्यों त्यों निचे नैन।
देनेहारा कोई और है, भेजत सो दिन रैन,
लोग भरम हम पर करें, तासो नीचे नैन।।

जैसा कि हर व्यवस्था की मूल भावना के साथ होता है, कालान्तर में इस भावना की उपेक्षा होने लगती है। हम देखते हैं कि फल बाँटने के चित्र अखबारों में छपते हैं जो दान लेने वाले के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाते हैं और दानदाता के अहं को बढ़ाते हैं। तो आइए! हम भी विनम्रता से दान करने को अपनी आदत बनाएँ।

– २६९ जीवाजी नगर,
ठाठीपुर ग्वालियर ४७४०११

सत्यार्थप्रकाश पहेली-१

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

स	१	ता	■	२	व	३	बे	३	■	■
■	ज	४	५	नै	५	र	■	६	णे	श
अ	७	■	रा	८	■	स	९	स्व	९	■
के	१०	■	बु	११	■	अ	१२	न्त	प्रा	१३

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१- जो सब जगत् की उत्पत्ति करता है इससे परमेश्वर का यह नाम है।
२- जो सबमें व्याप्त और जानने के योग्य है इससे ईश्वर का यह नाम है।
३- जो अपनी व्याप्ति से सबका आच्छादन करे इससे ईश्वर का यह नाम है।
४- जो दुष्टों का ताडन और अव्यक्त तथा परमाणुओं का अन्योन्य संयोग वा वियोग करता है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
५- जो सबमें सहज से प्राप्त धैर्यवान है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
६- जो प्रकृत्यादि जड़ और सब जीव प्रख्यात पदार्थों का स्वामी वा पालन करनेहारा है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
७- जो सबको भीतर रखने सबको ग्रहण करने योग्य चराचर जगत् का ग्रहण करने वाला है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
८- जो एकान्त स्वरूप जिसके स्वरूप में दूसरा पदार्थ संयुक्त नहीं जो दुष्टों को छोड़ने व अन्य को छुड़ाने हारा है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
९- जिसको विविध विज्ञान अर्थात् शब्द, अर्थ संबंध प्रयोग का ज्ञान यथावत् होवे इससे ईश्वर का यह नाम है।
१०- जो सब जगत् का निवास स्थान, सब रोगों से रहित और मुमुक्षुओं को मुक्ति समय में सब रोगों से छुड़ाता है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
११- जो स्वयं बोधस्वरूप और सब जीवों के बोध का कारण है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
१२- जिसका अन्त अवधि मर्यादा अर्थात् इतना लम्बा, चौड़ा, छोटा बड़ा है ऐसा परिमाण नहीं है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
१३- जो निर्भ्रान्त ज्ञानयुक्त सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है। इससे ईश्वर का यह नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- ''अनूठी, अद्‌भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ'' एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मार्च २०१४

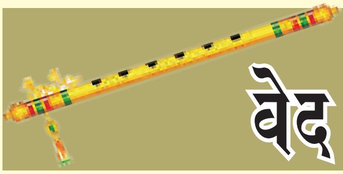

वेद की वंशी हाथ में लेकर १

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोधदिवस को आज लगभग १७३ वर्ष होने को आये। तत्पश्चात् उन्होंने देश को जो दिशा दी उसने इस देश की तकदीर बदल दी। आज उनके पार्थिव शरीर को नष्ट हुए १३० वर्ष से ज्यादा हो गए परन्तु उनके व्यक्तित्व व कृतित्व की चमक आज भी सूर्य के समान सारे संसार को आलोकित कर रही है। इसका प्रमुख कारण उनकी सत्यनिष्ठा, निःस्वार्थ भाव से मानव कल्याण के लिए सत्योपदेश करना और इस उपक्रम में अपने ऊपर किए गए प्रत्येक वार से विचलित न होना है। कवि ने सच ही कहा-

'तुझमें कुछ ऐसी बात थी, स्वामी जी तेरी बात पर,
कितने शहीद हो गये, कितनों ने सर कटा दिए। ....'

ऋषि दयानन्द की देन को संक्षिप्त आलेख में समेट सके ऐसी ताकत संभवतः किसी लेखक में नहीं। वेदवाणी को, उसके सत्यार्थ को दिग्दर्शित करने के पश्चात् चन्द लोगों की कारागृह से उसे मुक्त करा जनवाणी बना देना उनका सर्वोपरि स्तुत्य कार्य था। जो ज्ञान ईश्वर ने अपने प्यारे पुत्र पुत्रियों के लिए सृष्टि के आरम्भ में दिया था, कालचक्र में कुछ लोगों ने न केवल उसको अपने तक सीमित कर दिया वरन् उसको दूषित भी कर दिया। ऋषिवर ने इस सबको ध्वस्त करते हुए वेद ज्ञान के सूर्य को पुनः चमकाया। आज ऋषिबोध दिवस पर हम उस वेदों वाले ऋषि को नमन करते हुए ऋषि की वेद-वंशी के सात स्वरों के प्रतीक रूप उनके व्यक्तित्व के सात पक्षों को उद्घाटित करने के लिए कलम का सहारा ले रहे हैं।

आयें इन सात सुरों का आनन्द लें और प्रेरणा प्राप्त करते हुए निज जीवन को भी तदनुरूप ढालने का प्रयास करें।

१. सत्य के प्रति प्रबल आग्रह :- ऋषि दयानन्द के जीवन का अवलोकन करने पर पदे-पदे स्पष्ट होता है कि उनका रोम-रोम सत्य के प्रकाश से आलोकित था। अपने प्रमुखतम ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को लिखने का प्रयोजन ही महर्षि सत्य का विस्तार करना बतलाते हुए लिखते हैं कि 'इस ग्रन्थ को बनाने में मेरा मुख्य प्रयोजन सत्याऽसत्य अर्थ का प्रकाश करना है।' आर्य समाज के १० नियमों में से प्रथम पाँच नियमों में सत्य शब्द अवश्य आता है।

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२.ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३. वेद सब-सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वथा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

पाठकगण! यहाँ आप समझ सकते हैं कि ऋषि दयानन्द न केवल स्वयं सत्य से अनुपूरित थे वरन् वे आर्यसमाज के सदस्यों से भी इसी प्रकार की उम्मीद करते थे। आज उनके बोधदिवस पर हमें सोचना है कि हम उनकी अभिलाषा की पूर्ति करने में कितने पास अथवा कितने दूर हैं।

ऋषि दयानन्द के जीवन से एक और बात उपस्थित होती है कि जब तक जिस बात को उन्होंने सत्य माना उसको पूरी आस्था और दृढ़ता के साथ माना और जब तर्क व विवेक के धरातल पर वह गलत सिद्ध हुयी तो उसे त्यागने में उन्होंने एक सैकण्ड का भी समय नहीं लगाया। मूलशंकर के जीवन को देखिये। पिताजी पूर्णतः शैव थे। तो पुत्र को भी शिव के परमेश्वर होने का पूर्ण विश्वास था। आस्था इतनी गहन थी कि शिवरात्रि की रात्रि में सब सो गए परन्तु यह १४ साल का बालक शिवदर्शन करने की विश्वास भरी लालसा में जगता ही रहा, जब तक कि तर्कशूल ने पार्थिव पूजन की आस्था को छिन्न-भिन्न न कर दिया। यह भी देखिए कि उस दिन से अन्त दिन तक दयानन्द ने कभी न पार्थिव पूजा की न उसका समर्थन किया। क्योंकि सत्य जानकर उसे आचार में लाना ही उनको अभीष्ट था।

इसके पश्चात् बहिन और चाचा की मृत्यु के पश्चात् जब वैराग्य की उत्पत्ति हुई तो निश्चय करके सत्य की खोज के लिए गृह-त्याग दिया और हम देखते हैं कि सत्य के इस प्रबल आग्रही को न तो विवाह का प्रलोभन रोक सका, न माँ का स्नेह और न पिता का वैभव और न ही पिता की कैद।

ऋषि का जीवन तो ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है जहाँ नाना प्रकार के प्रलोभन, नाना प्रकार के अपमान, प्राण पर किए गए घातक वार ये सब कुछ सत्य की ओर बढ़ते कदमों को रोकने में पूर्णतः विफल रहे। ऋषि की मान्यता थी कि ईश्वर ने मानव को विवेक दिया है। तर्क के आधार पर सत्य की खोज करके और सत्य का निश्चय होने के पश्चात् उसे अपनाने में फिर देर नहीं करनी चाहिए। हम देखते हैं कि उन्होंने तंत्र-ग्रन्थों में बहुत सारे चक्रादि के विषय में पढ़ा था और उनके प्रति वे संशय में ही थे। जैसे ही एक स्थल पर उन्होंने एक शव को बहते हुए देखा तो चक्रों की परीक्षा करने के लिए शव को किनारे पर खींच लाये जबकि यह कार्य जुगुप्सा से युक्त था, फिर भी सत्य के प्रबल आग्रही को इसमें तनिक भी हिचक नहीं हुई और जब शवोच्छेदन के

बाद यह निश्चय हो गया कि तंत्र-विद्या असत्य है तो कटे-फटे शव के साथ ही सारे तंत्र-ग्रन्थ त्याग दिए।

जिस समय गुरु विरजानन्द की कुटी पर पहुँचे। दरवाजा खटखटाया। गुरु ने भीतर से पूछा कौन? स्वामी जी उत्तर देते हैं कि भगवन! यही तो जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ। दण्डी जी ने दरवाजा खोला और पूछा कि क्या-क्या पढ़े हो? ऋषि ने सब कुछ बतलाया। गुरु ने कहा कि ये सब जाल ग्रन्थ हैं। इनको तुरन्त यमुना में फेंककर आओ। आज का पाठक कल्पना भी नहीं कर सकता कि कितने कष्ट सहन करके उन ग्रन्थों को दयानन्द ने एकत्रित किया था। बर्फ में शरीर गलने लगा। कंटकों ने शरीर को लहूलुहान कर दिया। और लगभग १६ वर्ष में जिन्हें इकट्ठा किया, सत्य के उस पुजारी ने सत्य के लिए उन सभी ग्रन्थों का त्याग करने में तनिक भी विलम्ब नहीं किया। आगे भी हम देखते हैं ईश्वर, वेद, धर्म, समाज तथा राष्ट्र सबंधी अवधारणाओं को

सुनिश्चित करने के पश्चात् ऋषि उनसे एक पल के लिए भी विरत् नहीं हुए। उदयपुर में दिया गया महाराणा सज्जन सिंह जी का प्रलोभन कि अगर, वे मूर्तिपूजा भले ही नहीं करें इसका मण्डन भले ही न करें परन्तु मूर्तिपूजा का खण्डन न करें तो मेवाड़ के अधीश्वर एकलिंगजी की गद्दी उनको सौंप दी जायेगी, जहाँ कि अथाह सम्पत्ति उनके नियंत्रण में होगी जिससे कि वे अपने वेदभाष्य का पुनीत कार्य भी कर सकेंगे। परन्तु ऋषि ने मन्यु से आविष्ट हो जो उत्तर दिया वह संभवतः पाठकों के समक्ष ऋषि के व्यक्तित्व को खोलकर रख देगा। 'राजन् तुम्हारे राज्य से तो एक दौड़ लगाकर के पार चला जाऊँगा परन्तु उस ईश्वर के राज्य से मैं कैसे बाहर निकल सकता हूँ? अतः उसकी आज्ञा व सत्याचरण से मैं कभी विरत् नहीं रह सकता।'

सत्यमूर्ति दयानन्द ने अपने सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम प्रतिज्ञा की कि **'त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि'** और अन्त में **'त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्। ऋतमवादिषम्। सत्यमवादिषम्।'** लिखकर मानो अपने सत्याचरण पर विश्वासपूर्वक मोहर लगा दी। ऐसा कितने लेखक कर पाते हैं यह विचारणीय है।

आज हमने इस आलेख में ऋषि की वेद-बंसुरी के एक सुर का अत्यन्त संक्षेप में दिग्दर्शन किया है। आशा है ऋषिभक्त अपने जीवन में अब तक अगर इस संदर्भ में किसी प्रकार की शिथिलता आई है तो ऋषि की भव्य मूर्ति को अपने समक्ष साकार करते हुए सत्य के पथ पर यथाशक्य चलने का व्रत लेंगे।

कवि लाखन सिंह भदौरिया ने सही लिखा

'कितना बड़ा सत्य देखा था, कितने बड़े सत्य के दृग् से
इस जग की संकीर्ण परिधि में,
समा सका कब सत्य तुम्हारा' ....

- अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

दयानन्द के जन्म से हुई सत्य बरसात।
सदी सदी थी बाँझ अब खिले मन्त्र जलजात।।
योग्य चिकित्सक आ गया मचा विश्व में शोर।
जागे गहरी नींद से लगा दीखने चोर।।
पाखण्डों का पीलिया अंधियारा घनघोर।
दयानन्द दिनकर उगा हुई भोर हर ओर।।
तर्क तीर बौछार से छिन्न भिन्न अंधियार।
मरुस्थल में वर्षा हुई आई वेद बहार।।
बंजर में भी हल चले हलचल मची अकूत।
ऋषिवर की हुंकार से भागे भ्रम के भूत।।

- डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी

दयानन्द जयन्ती पर विशेष

प्रकटी एक आशा की किरण

दयानन्द सा ऋषिवर पाकर, धन्य हो गई वसुन्धरा।
उसने जग में पुनः जगाई, वेद ज्ञान की परम्परा।।
जन्मजात संन्यासी था वह, छू न सकी उसको माया।
प्रबल नियंत्रण में थे उसके, मन, वाणी,रसना, काया।
ईश कृपा से उसे मिली थी, अनुपम प्रज्ञा ऋतम्भरा।।
दयानन्द सा ....।।
सच्चे शिव की परम खोज में, कहाँ-कहाँ भटका स्वामी।
संभव है निर्जन गिरि वन में, मिल जाये अन्तर्यामी।
सुख वैभव को त्याग व्रती ने, उन राहों को स्वयं वरा।।
दयानन्द सा ....।।
संस्कृति का औ संस्कार का, अमर पुजारी अलबेला।
साहस करुणा क्षमा प्यार का, उसके उर में था मेला।
जन-जनहित उसके अन्तस से, अमृत निर्झर सदा झरा।।
दयानन्द सा ....।।
उसके अनुगामी बन कितने, जीवन हैं सँवरे सुधरे।
मुक्त हुए वे पाखण्डों से, पीड़ा सागर से उबरे।
जो उसके द्वारे आया, उसका सब सन्ताप हरा।।
दयानन्द सा ....।।
श्रेयस्कर की हो उपासना, दुरित दूर हों जग भर के।
योगिराज की रही कामना दैनिन्दिन, विश्वम्भर से।
क्रान्ति पुरुष की गौरव गाथा , युग-युग गाती पुण्य गिरा।।
दयानन्द सा ....।।

- (स्व.) रमेश चन्द्र गुप्ता
पूर्व प्रधान, आर्य समाज, भीमगंज मण्डी, कोटा जंक्शन

तीन बातें सदा याद रखें

सृष्टि के ३ कारण	निमित्त	उपादान	साधारण
अनादि ३ तत्त्व	ईश्वर	जीव	प्रकृति
चेतन देवता ३ प्रकार के	माता	पिता	आचार्य
सृष्टि की अवस्था	सृष्टि	स्थिति	प्रलय
अन्तःकरण के ३ तत्व	मन	बुद्धि	अंहकार
याद रखें ३ को सदा	ईश्वर	मृत्यु	गायत्री मंत्र
मन की ३ अवस्था	जागृत	स्वप्न	सुषुप्ति
प्रार्थना के ३ रूप	स्तुति	प्रार्थना	उपासना
जाप ३ प्रकार	मानसिक	उपाँशु	वाचिक
स्वर ३ प्रकार के	ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत्
दूरियाँ ३ प्रकार की	स्थान की	काल की	ज्ञान की
लोक ३ प्रकार के	भूलोक	अन्तरिक्ष	द्युलोक
प्रकृति के ३ गुण	सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण
"द" से तीन काम करें	दान	दया	दमन
धन की ३ गति	दान	भोग	नाश
ओ३म् में ३ अक्षर	अकार	उकार	मकार

समाधि	सुषुप्ति	मोक्ष	**जीव** की ३ अवस्था
जननी	मातृभूमि	वेदमाता	**माताएँ** ३ प्रकार की
धारणा	ध्यान	समाधि	**अन्तरंग** की ३ अवस्था
ब्रह्मा	विष्णु	महेश	**ईश्वर** के ३ विशेषण नाम
स्थूल	सूक्ष्म	कारण	**शरीर** ३ प्रकार के
भूः	भुवः	स्वः	**व्याहृतियाँ** ३ प्रकार की
आयु	जाति	भोग	**कर्म** के ३ प्रकार के फल
ठोस	तरल	गैस	**पदार्थ** की ३ अवस्था
सूर्य	वायु	जल	**ऋतुओं** के ३ कारण
देवपूजा	संगतिकरण	दान	**यज्ञ** के ३ रूप
दैहिक	दैविक	भौतिक	**दुःख** ३ प्रकार के

ले.- शिवनाथ प्र. (काजीचक)

If you always tell the truth you don't have to remember anything.

मधुर जीवन के मूल मंत्र

श्री चन्द्रप्रभ

जीवन को हम इस तरह जिएँ कि जीवन स्वयं प्रभु का प्रसाद और वरदान बन जाए।

सुख-शान्तिपूर्वक जीवन-यापन करना जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि है। दुनिया में दो किस्म के लोग हैं, एक वे जो जीवन के भूखे हैं, दूसरे वे जो सुख से जीने के लिए तरस रहे हैं। जो औरों के जीवन के भूखे हैं, वे भी रुग्णचित्त हैं और जो जीने के लिए तरस रहे हैं, वे भी किसी न किसी मानसिक अथवा व्यावहारिक विपदा के रोग से घिरे हुए हैं। दुनिया में दुख के बहुतेरे रूप हैं। किसी के घर संतान पैदा होने पर थाली बजती है तो किसी के घर बच्चा पैदा होने पर आँसू ढुलकाये जाते हैं, यह सोचकर कि पहले से ही छः हैं, अब सातवें का भरण-पोषण कैसे होगा! संभव है जन्म किसी को सुख भी दे दे, पर रोग, भुखमरी, बेरोजगारी, बुढ़ापा और मृत्यु की घटना भला किसे सुख देती होंगी! दुनिया में लाखों-करोड़ों अस्पताल और चिकित्सकों के होने के बावजूद दुनिया की आधी से ज्यादा जनसंख्या रुग्ण और दुःखी है।

यह मनुष्य की विडम्बना है कि वह केवल धन-संपत्ति और सुविधा-साधनों को ही जीवन के सुखों का मूल आधार मानता है, जबकि एक अधिसंपन्न संभ्रान्त व्यक्ति जितना चिंतित, तनावग्रस्त और रुग्णचित्त मिलेगा, उतना एक सामान्य व्यक्ति नहीं। जरा किसी पैसे वाले व्यक्ति की जिन्दगी पर ध्यान देकर देखें। उसकी सेवा में दस गाड़ी-बँगले और नौकर मिल जाएँगे, पर उसकी भागमभाग जिंदगी में इतनी फुर्सत नहीं कि वह अपने बच्चों को प्यार दे सके; माता-पिता और भाई-बहिनों के सुख दुःख में सहभागी हो सके। उसे दिन में कोर्ट और फैक्ट्री के दस लफड़े निपटाने हैं। भरपेट भोजन नही कर सकता, क्योंकि चर्बी की तकलीफ है; भोजन भी

बिना तेल-घी-मिर्च-मसाले का है, क्योंकि ब्लड प्रेशर और टेन्शन की तकलीफ है; हार्ट की तकलीफ भी अधिकतर इन्हीं लोगों को होती है। तो क्या हम इस सारे स्वरूप को ही सुखी जीवन कहते हैं? सुखी वह नहीं है जिसके पास मोटर-बंगला है, वरन् वह है जो चैन की नींद सोता है और स्वस्थ मानसिकता का मालिक है।

समझें, जीवन का मूल्य

प्रकृति की दृष्टि में तो हर व्यक्ति अधिसम्पन्न है। अपने आपको दीन-हीन समझना स्वयं की अज्ञानता है। क्या हम जीवन का मूल्य समझते हैं? माना कि सोने और हीरे-जवाहरात का मूल्य है, पर क्या जीवन से ज्यादा है? वास्तव में जीवन है, तो तुच्छ-से-तुच्छ वस्तु भी बहुमूल्यवान है। जीवन नहीं है, तो मूल्यवान वस्तु भी अर्थहीन है। एक अकेले जीवन के समक्ष पृथ्वी भर की समस्त सम्पदाएँ तुच्छ और नगण्य हैं।

कृपया अपने आप पर ध्यान दें। इस बात को जानकर आप चमत्कृत हो उठेंगे कि हर व्यक्ति अपने आप में अकूत संपत्ति का खजाना है। जरा मुझे बताएँ कि दुनिया में गुर्दे का, रक्त का, हृदय का कितना मूल्य है? एक आदमी के गुर्दों, हृदय और आँखों तक का मूल्य मिला लिया जाए, तो हाल ही के दामों से ऐसा कौन-सा व्यक्ति है, जो करोड़पति न होगा। हम अपनी दीन-हीन भावना का त्याग करें, हमारा एक शरीर अपने आप में करोड़ों का है। एक करोड़पति सैकड़ों हजारों के लिए रोये! हम हृदय से प्रफुल्लित हों और प्राप्त जीवन के लिए ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से भर उठें।

व्यक्ति का जीवन दुःखी इसलिए है, क्योंकि वह रुग्ण और विक्षिप्त-चित्त है। स्वर्ग और नरक कोई आसमान और पाताल के नक्शे नहीं हैं, वरन् ये दोनों जीवन के पर्याय हैं। शान्त चित्त स्वर्ग है, अशांत चित्त नरक; प्रसन्न हृदय स्वर्ग है, उदास मन नरक। हर प्राप्ति में आनंदित होना स्वर्ग है, व्यर्थ की मकड़ लालसाओं में उलझे रहना नरक। वह व्यक्ति पर निर्भर है कि वह अपने आपको नरक की आग में झुलसाए रखना चाहता है या स्वर्ग के मधुवन में आनन्द-भाव से अहोनृत्य करना चाहता है। हम अपने शारीरिक और मानसिक रोगों से, आशंका, उद्वेग और उत्तेजनाओं से स्वयं को उपरत करें और जीवन को सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के मंगलमय पथ की ओर अग्रसर करें।

जीवन के सम्पूर्ण सौंदर्य और माधुर्य के लिए केवल उसका रोगमुक्त होना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् शारीरिक अरोग्य के साथ विचार और कर्म की स्वस्थता-स्वच्छता और समरसता भी अनिवार्य चरण है। शृंगार-प्रसाधनों को अथवा जूते-चप्पल-सैंडल और कपड़े के ऊँचे-नीचे पहनावे को सुख-सौंदर्य का आधार न समझें। स्वस्थ, सुन्दर और मधुर जीवन के लिए हमें जीवन के बहुआयामी पहलुओं की ओर ध्यान देना होगा। आओ, हम ऐसे कुछ पहलुओं को जीने की कोशिश करें, जिनसे कि हमें हमारे जीवन का स्वास्थ्य मिल सके।

स्वस्थ जीवन के लिए सात्त्विक आहार

स्वस्थ जीवन के लिए इस बात का सर्वाधिक महत्व है कि हम क्या खाते पीते हैं। जब तक व्यक्ति यह नहीं समझेगा कि आहार कब क्यों और कैसा लेना चाहिए, तब तक व्यक्ति रोगों से घिरा हुआ ही रहेगा। आहार जीवन के वाहन का ईंधन है। आहार करने का अर्थ यह नहीं कि जब जो मिल गया तब वह खा लिया। पेट कोई कूड़ादान नहीं है। सही ईंधन के अभाव में यंत्र की व्यवस्था गड़बड़ा सकती है। स्वस्थ जीवन के लिए भोजन का स्वस्थ-सात्त्विक होना जरूरी है।

आखिर जैसा हम खाएँगे, वैसा ही तो परिणाम आएगा। बर्तन पर जैसा चित्र उकेरेंगे, वही उभर कर आएगा। मन के परिणाम अगर विकृत हैं, तो मानकर चलो कि तुम जो आहार ले रहे हो उसमें कुछ-न-कुछ विकृति अवश्य है। रक्त शुद्धि और रक्त-गति के समुचित नियन्त्रण के लिए भी आहार की स्थिति और गति पूरी तरह प्रभावी होती है। यह आम समझ की बात है कि 'जैसा खावे अन्न, वैसा रहे मन।' यदि आप शराब पीएँगे, तो शरीर को गति देने वाली कोशिकाएँ सुप्त और अवरुद्ध हो जाएँगी; जर्दा-तम्बाकू का इस्तेमाल करेंगे, तो शरीर की हड्डियाँ गलने लग जाएँगी; अधिक भोग-परिभोग किया, तो कायायंत्र की मूल ताकत कमजोर हो जायेगी। यानी दीर्घ जीवन प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति अपने ही कारणों से अपनी उम्र को घटा बैठेगा। दीर्घ जीवन के लिए तन-मन की शक्ति का संरक्षण और अभिवर्द्धन सहज अनिवार्यता है।

हम बासी भोजन, गरिष्ठ अथवा बाजारू भोजन से परहेज रखें। हम हमेशा घर में बना हुआ, ताजा-सात्त्विक भोजन ही ग्रहण करें। अधिक मीठा, अधिक खट्टा, अधिक नमकीन चीजों के उपयोग पर संयम रख सकें तो ज्यादा बेहतर है। भोजन ज्यादा न खाएँ, यथावश्यक भोजन करना ही स्वस्थ जीवन का मंगलसूत्र है। हाँ, यदि आवश्यकता से दो ग्रास कम ग्रहण करें, तो पेट की आँतों को भोजन पचाने में तनाव का सामना न करना पड़ेगा। भोजन उतना हो, और वह हो जो हमें स्वास्थ्य और स्फूर्ति प्रदान करे। अधिक गरम और गरिष्ठ भोजन करने से वीर्यस्त्राव हो जायेगा। आखिर शरीर तो उतने ही आहार की शक्ति ग्रहण करेगा, जितनी कि उसे अपेक्षा है। वह भोजन घातक है, जो उत्तेजना जगाए या प्रमाद पैदा करे।

थोड़ा-सा व्यायाम भी

यदि स्वस्थ भोजन करने के बावजूद शरीर में कमजोरी रहती है, शक्ति शिथिल रहती है, तो इसका अर्थ है कि शरीर के ऊर्जा-स्रोतों में कहीं कोई रुकावट आई है।

तब हमें किसी स्वास्थ्य-चिकित्सक से अवश्य सलाह लेनी चाहिए। भोजन की सात्त्विकता के साथ हमें शरीर के विभिन्न अवयवों के स्वस्थ संतुलन हेतु थोड़ा-बहुत व्यायाम भी अवश्य करना चाहिए। इसके लिए हमें सूर्योदय से पहले दो किलोमीटर तक लंबी साँस लेते हुए टहल लेना चाहिए अथवा सुबह दस-पंद्रह मिनट तक कुछ योगासन कर लेने चाहिए। यदि समय और स्थान की सुविधा न हो, तो एक ही जगह पर दो-तीन मिनट की जॉगिंग/स्थिर-दौड़ कर लेनी हितावह है। इससे हमारे शरीर के जीवित कोष्ठ सक्रिय होते हैं, शरीर की जो कोशिकाएँ सुप्त या शिथिल हैं, वे भी सक्रिय होकर हमारे

लिए सहभागी बन जाती हैं।

अपने किसी भी कार्य को करने से पहले उसके बारे में थोड़ा-सा मनन कर लें। सोच-समझकर किया गया कार्य हमेशा वांछित परिणाम देता है। बिना सोचे-समझे किये गये कार्य पर अन्ततः पछताना पड़ता है। हर कार्य को उत्साह से करना चाहिए, पर इसका मतलब यह नहीं कि उसे जल्दबाजी में निपटाने की कोशिश की जाए। बुद्धिमान पुरुष काम करने से पहले सोचता है; समझदार व्यक्ति काम करते समय सोचता है, जबकि मूर्ख काम करने के बाद। भला जब प्रकृति ने हमें श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान की है, तो क्यों न हम बुद्धिपूर्वक ही हर कार्य को संपादित करें।

न उलझें लालसाओं में

हम व्यर्थ की लालसाओं में भी न उलझें। आवश्यकताओं के अनुसार सभी कुछ सँजोया जाता है, लेकिन आवश्यकता से अधिक किसी भी चीज की व्यवस्था करना जहाँ सामाजिक अपराध तो है ही, वहीं उसे सँभालने-सजाने और उसकी सुरक्षा की अनावश्यक सरपच्ची करनी पड़ती है। हमारे पास अगर जरूरत से ज्यादा है, तो उसे जरूरतमंद लोगों को प्रदान कर दें। आवश्यक सब कुछ हो, अतिरिक्त कुछ नहीं-अपने आपमें यह अपरिग्रह-धर्म का पालन है। भौतिक सुखों का कोई अंत नहीं है। ये सब तो वे चापलूस शत्रु हैं, जो दिन-रात हमारा खून चूसते रहते हैं। हम लालसाओं में न उलझें, जीवन के आवश्यक कार्यों और कर्त्तव्यों का पालन करें। सभी कार्य और कर्त्तव्य जीवन-पथ के देवदूत होते हैं। कर्त्तव्य को कर्त्तव्य की भावना से निष्ठापूर्वक संपादित करना देवों की ही अर्चना है।

आप सबल हैं, समर्थ हैं, सौभाग्यशाली हुए हैं, इसीलिए आपके पास जरूरत से ज्यादा अर्जित होता है। जो भोगा सो पूरा हुआ, जो बचा सो लुटा दिया। अरे, तुम दाता बनो। तुम्हारे हाथ सदा लुटाते रहें। देकर खुश बनो। जो भोगा सो मिट गया, जो बाँटा सो बढ़ गया। जो छिप-छिपकर खाता है, वह पाखाने तक पहुँच जाता है और जो बाँट-बाँटकर स्वीकार करता है, उसके लिए भोजन प्रसाद बन जाता है। हम अपरिग्रह/असंग्रह को अपने जीवन में जीएँ और जो कुछ भी हमारे पास अतिरिक्त आता जाए, उसे निःस्वार्थ आनंद भाव से जगत् की व्यवस्था में अपनी ओर से समर्पित कर दें। नाव पर उतना भार वहन करें कि वह हमें किनारा दिखा सके। अतिरिक्त चढ़ाया गया भार नाव को मझधार में डुबोता है।

न गिला, न गुमानः सदाबहार प्रसन्नता

अपनी ओर से भरसक कोशिश रहे कि सदा सत्य बोलें और सत्य का समर्थन करें। हर व्यक्ति और परिस्थिति के प्रति समान दृष्टि रखें, समदर्शी रहें। निंदा-प्रशंसा, अमीरी-गरीबी, हानि-लाभ दोनों ही स्थितियों में समान रहें। यह कुदरत की व्यवस्था है कि कोई भी परिस्थिति एक जैसी नही रहती। अगर अनुकूल है तो वह भी बदल जाती है और प्रतिकूल है तो वह भी। जब परिवर्तन ही कुदरत की आत्मा है, तो अनुकूलता पर गुमान कैसा और प्रतिकूलता पर गिला कैसा! तकलीफ को पाकर खिन्न न हों। विश्वास रखो। ईश्वर के घर में अंधेर नहीं है। जीवन में एक द्वार बंद होता है, तो दूसरा खुल भी जाया करता है। यदि कोई हमारे साथ गलत व्यवहार कर दे, हमारी उपेक्षा कर डाले, तो दुःखी और क्रोधित होने के बजाय उसके प्रति अपने हृदय में क्षमा और करुणा के मेघ उमड़ने दें, ताकि हमारा चित्त तो शीतल रहे ही, संभव है हमारे कारण अगले का क्रोध भी शीतल हो जाए।

हम अच्छे लोगों की संगत में रहें, लोगों को अपनी संगत में रखें, जिससे कि हमारा ज्ञान और विवेक बना रहे। सदा सौम्य और प्रसन्न रहें। विपरीत परिस्थितियों को अपनी प्रसन्नता छीनने का अधिकार न दें। प्रतिकूल पहलुओं से सामना हो जाने के बावजूद अपनी ओर से सदा सकारात्मक कदम उठाएँ। जीवन को मधुर बनाने के लिए हम दूसरों का सम्मान करना सीखें। जैसा सम्मान हम स्वयं के लिए चाहते हैं, वैसा ही हम सभी प्राणियों का सम्मान करने का अभ्यास करें। हम इस बात की शपथ ग्रहण करें कि 'मैं बिना किसी भेदभाव अथवा पक्षपात के सभी लोगों के जीवन एवं प्रतिष्ठा का सम्मान करूँगा।'

हम प्रतिदिन एक व्यक्ति में कोई-न-कोई विशेषता अवश्य पहचानें और उसकी अनुमोदना करें। कोशिश करें कि हम प्रतिदिन एक अच्छा कार्य अवश्य करें। जब भी किसी से मिलें, मुस्कुराकर मिलें। कोशिश करें कि हमें जो कौशल प्राप्त है, हम उसे दूसरों को सिखाएँ। पड़ोसियों से प्यार करें और इस तरह अपने इर्द-गिर्द के वातावरण को प्रसन्न और सुरभित होने दें। सदा स्वच्छता रखें और अपने ग्रह की रक्षा करें। जितनी अपनी आजीविका हो, उसका एक अंश जरूरतमंद लोगों एवं कल्याणकारी कार्यों के लिए समर्पित करें। ऐसा करके आप पाएँगे कि हमें केवल कमाना ही सुख नहीं देता, वरन् सहयोग भी हमारे सुख और माधुर्य को बढ़ा रहा है।

ये जो छोटी-छोटी बातें हैं, अगर इन पर हम पूरा ध्यान दे सकें, तो लघुता में प्रभुता बसे। ये छोटी बातें स्वस्थ-सुंदर और मधुर जीवन के लिए चमत्कारी मंत्र साबित हो सकती हैं। सचमुच, जीवन को हम इस तरह जीएँ कि जीवन स्वयं प्रभु का प्रसाद और वरदान बन जाए।

(साभार- ऐसे जिएँ)

ऋषि बोधोत्सव पर विशेष

हर हर महादेव के साथ पुजारियों की चाँदी

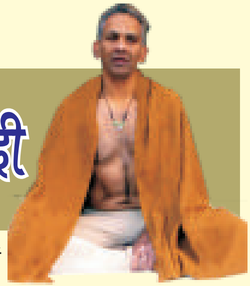

योगाचार्य डॉ.नरेन्द्र कुमार सनाढ्य

यह कैसी विडम्बना है कि एक छोटी सी घटना (चूहे का शिवलिंग पर चढ़कर प्रसाद खाना) ने बालक मूलशंकर के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती बनने का मार्ग प्रशस्त कर दिया और दूसरी तरफ आज इससे कहीं बड़ी घटनाएँ (दुर्घटनाएँ) यथा मंदिर से मूर्तियों की ही चोरी हो जाना, मूर्तियों पर धारण कराये गये जेवरों की चोरी, मंदिर में तथाकथित सर्वशक्तिमान मूर्ति के सामने होने वाले हादसों के तहत निर्दोष अंध भक्तों की असमय मृत्यु, मंदिर में छेड़छाड़ व अन्य दुष्कर्म आदि के बावजूद कोई किसी दयानन्द का पैदा होना तो दूर की बात, महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए रास्ते पर चलने को कोई तैयार नहीं हो रहा। महाशिवरात्रि के पर्व पर चारों ओर हर हर महादेव एवं बम बम महादेव के नारों के साथ मंदिरों के पुजारियों एवं उनके साथियों के लिए खुशहाली की बहार आ जाती है। भगवान शिव के कपोलकल्पित स्वरूप को अंगीकार करते हुए भांग एवं गांजे के नशे में चूर होकर चारों ओर (अ) धार्मिक आचरण अपने चरम पर पहुँच जाते हैं। अजीब विरोधाभास है। अपनी कल्पना से बनाए गए उस तथाकथित भगवान को खुश करने के लिए व्रत/उपवास के तहत सर्वसाधारण को अन्न ग्रहण करने से रोका जाता है, लेकिन भांग व चिलम पर कोई रोक नहीं लगायी जाती और कुतर्क यह दिया जाता है कि यह चीजें (भांग, गांजा, चरस) भगवान शंकर को अति प्रिय थीं इसलिए उन्हें खुश करने के लिए वर्ष में एक दिन तो प्रसाद स्वरूप ही सही यह सबको करना ही चाहिए। जो आज प्रसाद के रूप में थोड़ा सा ग्रहण करते हैं वे अगले वर्ष शिवरात्रि तक पक्के नसैड़ी बन जाते हैं। इस प्रकार एक शृंखला सी बन जाती है। नशे के इस जाल में सबसे अधिक जकड़ने की संभावना हमारी युवा पीढ़ी की होती है। इस प्रकार इस एक दिन में ही भांग, गांजे एवं चरस की बिक्री कई गुना बढ़ जाती है एवं इस दुर्व्यवसाय से जुड़े सभी लोगों की चाँदी हो जाती है। ऐसे समय में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर में उक्त पर्व को ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाकर हमें यह सीखने का अवसर दिया जाता है कि त्यौहार कैसे मनाये जाने चाहिए। इसके लिए हम न्यास का जितना आभार प्रदर्शित करें कम है। अभी हाल ही में 'ओ माई गॉड' नामक एक फिल्म प्रदर्शित हुई। यह फिल्म वाकई एक सार्थक प्रयास था। यह प्रयास आँधी तूफान के बीच एक दीपक जलाने के समान था। जिसके लिए उक्त फिल्म निर्माण से जुड़ा हर व्यक्ति बधाई का पात्र है। सबने इस फिल्म को बहुत सराहा। मुझे आज तक ऐसा कोई नहीं मिला जिसने यह कहा हो कि यह फिल्म अच्छी नहीं है। किसी ने भी इस फिल्म के बारे में नकारात्मक टिप्पणी नहीं की। लेकिन यह सिर्फ शाब्दिक प्रशंसा ही रही। किसी में कोई बदलाव नहीं आया। सब कुछ यथावत् चल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि फिल्म आज भी आम जन के लिए सिर्फ एवं सिर्फ मनोरंजन का साधन है, यह शिक्षा का साधन नहीं बन सकी। लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू देखें तो एक विरोधाभास नजर आता है एवं उक्त कथन में थोड़ा

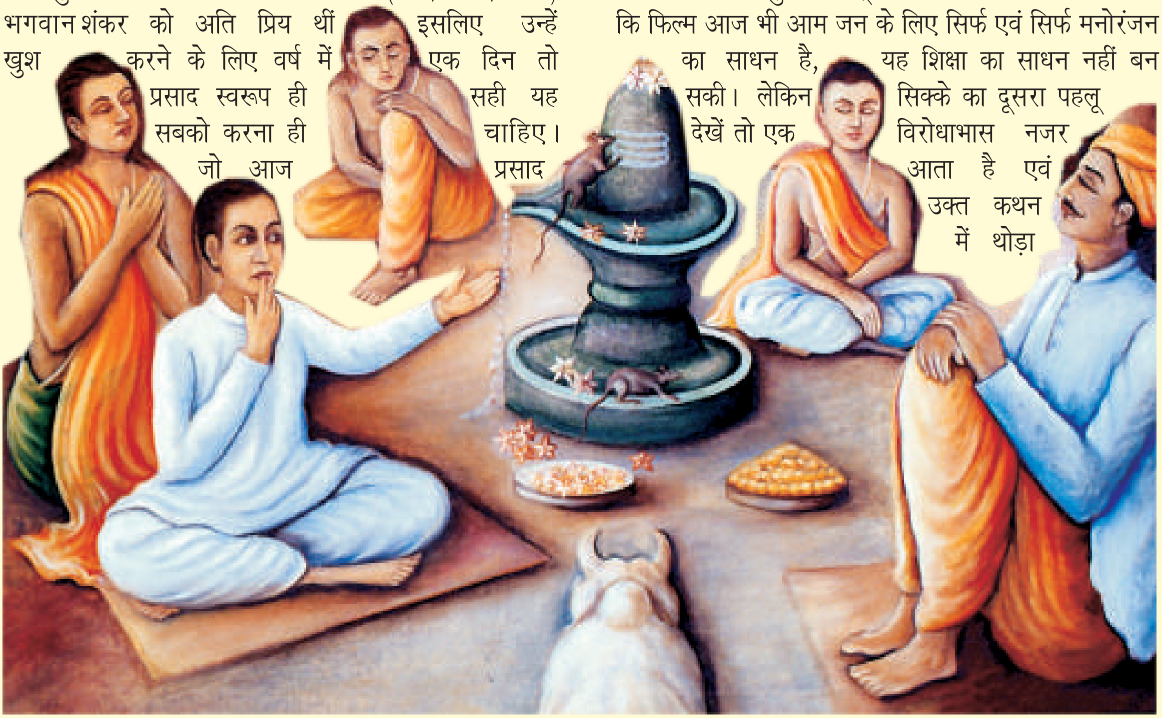

सा संशोधन करने की आवश्यकता महसूस होती है। अब इसे यूँ कहें कि फिल्म सुशिक्षा ग्रहण करने का माध्यम तो नहीं बन सकी हाँ कुशिक्षा ग्रहण करने का माध्यम हमेशा से रही है। इसका प्रमाण यह है कि अधिकांश अपराधी या दुष्कर्मियों से पूछताछ में यही सत्य सामने आता है कि उन्होंने उक्त दुष्कृत्य (चोरी, हत्या, लूट, बलात्कार, अपहरण इत्यादि) अमुक फिल्म को देखकर किये। तब इसी गहन अंधकार में एक और छोटे से दीपक के रूप में एक कविता निकलती है:-

खोदे जो उम्र भर कब्र, उसे भी अंत में शमशान मिलता है,
रोज जाता है मंदिर जो पूजा करने, उसे भी वहाँ सिर्फ पाषाण मिलता है।
लिपटा है शहादत का कफन उससे पोंछ दे आँसू, किसी गरीब के,
कहता है ये बंदा उसी को सिर्फ उसी को, भगवान मिलता है।
मंदिर बड़ा प्यारा शब्द था,
प्यार गायब हो गया, मंदिर सब दुकान हो गए,
पुजारी बड़ा प्यारा शब्द था,
पूजा गायब हो गई, पुजारी सब व्यापारी हो गए,
जुआरी हो गए, निवेशक हो गए,
पुजारी बस पुजारी न रहे जाने क्या क्या हो गए।
फूल बेचने वाले को ग्राहक की चाह होती है,
नारियल वाले को क्रेता की राह होती है,
मंदिर के व्यवस्थापक की आँख भी राह तकती है,
मंदिर में जाने वाला भक्त नहीं ग्राहक होता है,
धर्म की अफीम के नशे में चलने वाला जातक होता है,
मंदिर की भव्यता भी ग्राहकों की संख्या
एवं चढ़ावे की राशि से आँकी जाती है,
और बेकार लगने पर भगवान की तस्वीर भी
घर के किसी कोने में टांकी जाती है।

तुम्हें जरूरत नहीं है बाहर ढूढ़ने की भगवान को, भगवान साक्षात बसता है अपने भक्तों के दिलों जान में, **ईश्वर सर्वभूतानाम् हृदयेष्वतिष्ठति, या आत्मा वा अरे दृष्टव्यः श्रोतव्यो मन्त्व्यो निदिध्यासितव्यः** या इसे यूँ भी कहें कि-

तस्वीर-ए-यार सीने में रची बसी है,
जरा नजर झुकाई और दर्शन हो गए।
खुद को जो जाने सो खुद में खुदा है,
खुद को न जाने सो खुदा से जुदा है,
खुद की खुदाई को खुदा ही जाने या फिर पैगम्बर पहचाने,
यह पता नहीं लगता कि खुदा पर पैगम्बर फिदा है
या पैगम्बर पर खुदा फिदा है।
जब राम में देख रहीम में देखा
सबमें देखा तो बस खुदा ही खुदा है।
सोच को सँवारिये सितारे बदल जायेंगे,
नजरिये को सँवारिये नजारे बदल जायेंगे,
तुम्हें किश्ती को बदलने की जरूरत नहीं यारो,
किश्ती का रुख बदलिये किनारे बदल जायेंगे
फिर तुम्हारी किश्ती किसी मंदिर की ओर नहीं जा पाएगी,
नूर की बूँद नूर में ही समा जाएगी,
और इदन्न-मम की अन्तर्ध्वनि के साथ
आत्मा परमात्मा से मिल जायेगी।

- ६१, जे. पी. नगर
से.-८, हिरणमगरी, उदयपुर

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप ''५.६X९.०'' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

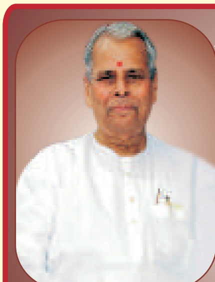
मिठाई लाल सिंह
न्यासी

श्रीमद्दयानन्द जन्मोत्सव
व
बोधोत्सव
के पावन अवसर पर
सभी भाई-बहिनों को
हार्दिक शुभकामनाएँ

समाचार

आदराञ्जलि

आर्य जगत् में एक अनूठी, दुर्लभ व अलौकिक घटना की पुनरावृत्ति
स्व. श्रीमती ब्रजलता आर्य के देह-दान ने महर्षि दधीचि का स्मरण कराया

आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के उपप्रधान एवं गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती ब्रजलता आर्य का ८ जनवरी २०१४ को अहमदाबाद में दुःखद निधन हो गया। उन्होंने अपने पूज्य ससुरजी स्व. श्री बंसीधर जी अग्रवाल के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए मरणोपरान्त चक्षुदान एवं देह-दान की इच्छा व्यक्त की थी। तदनुसार श्रीमती ब्रजलता आर्य के पार्थिव शरीर को ६ जनवरी २०१४ को सम्पूर्ण वैदिक अनुष्ठान के पश्चात् अहमदाबाद के सिविल हॉस्पीटल के मेडीकल कॉलेज को शोधकार्य हेतु ससम्मान अर्पित कर दिया गया।

(स्व.) श्रीमती ब्रजलता आर्य

सम्पन्न परिवार की नारी द्वारा मरणोपरान्त किये जाने वाले इस उत्सर्ग से सम्पूर्ण आर्य जगत् में एक अद्भुत प्रेरणा का संचार हुआ है। स्व. श्रीमती ब्रजलता आर्य के देह-दान के समाचार पाकर न केवल भारत के अपितु अमेरिका, कनाडा, हालैण्ड, इंगलैण्ड आदि अनेक देशों के आर्यजन हतप्रभ हैं और इस अनूठे कार्य के लिए नतमस्तक हैं। श्रीमती ब्रजलता अत्यन्त मृदुभाषी, दानशील, ममतामयी एवं करुणामयी आर्य महिला थीं। एक आदर्श अर्धांगिनी के रूप में उन्होंने अपने कर्तव्यों का आजीवन पालन किया। उन्होंने महर्षि के कार्यों के प्रचार-प्रसार में जीवनपर्यन्त अपने पति का साथ दिया। वे जीवन भर आर्यसमाज से जुड़ी रहीं। शारीरिक कष्ट एवं असुविधा महसूस करते हुए भी सामाजिक कार्यों के लिए उन्होंने अपने पति को सदैव मुक्त रखा।

किसी भी व्यक्ति के उदार एवं महान कार्यों के पीछे सदैव उसकी सहधर्मिणी की मूक तपस्या छिपी होती है। वे न केवल अपने पति श्री सुरेशचन्द्र आर्य की प्रेरणा बनीं अपितु उन्होंने स्वयं भी संगठन एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग के लिए दिल्ली सहित विदेशों में भी आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलनों आदि में भाग लेकर भारत का एवं गुजरात प्रान्त का प्रतिनिधित्व किया। वे हमेशा सभी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर सक्रिय रहती थीं। जीवनभर परोपकर एवं सेवा कार्यों में समर्पित उनका सरल व्यक्तित्व सदैव सभी के लिए प्रेरणा-स्त्रोत बना रहेगा।

प्रभु के प्रति अनन्य श्रद्धा रखते हुये एक आदर्श एवं करुणामयी नारी के रूप में उन्होंने अपने परिवार को किस प्रकार संस्कारित एवं पोषित किया इसका ज्वलन्त उदाहरण उनकी मेधावी एवं सुशील पुत्रवधू श्रीमती जया आर्य के निम्नलिखित विचारों से एवं उनकी काव्य रचना से स्पष्ट झलकता है-

'माँ से भी अधिक ममता प्रदान करने वाली मेरी सासुजी स्व. श्रीमती ब्रजलता आर्य एक सच्ची पुण्यात्मा थीं। ईश्वर पग-पग पर उनकी अग्नि-परीक्षा लेते रहे। वह साहस के साथ डटी रहीं। छोटी सी उम्र में विवाह हुआ। एक बड़ा सारा परिवार मिला जिसमें जिम्मेदारियों का अन्त ना था। परन्तु उन्होंने बखूबी न सिर्फ उनको निभाया बल्कि पूरे परिवार का दिल भी जीत लिया। पन्द्रह वर्ष तक वे असाध्य बीमारी से लड़ती रहीं मगर इच्छाशक्ति को कमजोर नहीं होने दिया। चेहरे पर अन्तिम समय तक उन्होंने अपनी सौम्य मुस्कान बनाये रखी। हमारी आँखे उनकी स्नेहमयी एवं उदारमयीं छवि को देखने के लिए सदैव तरसती रहेंगी। वे सहजता की, ममता की, सहिष्णुता की, धीरज की एवं सरलता की साक्षात मूर्ति थीं। कितने ही दिव्य गुणों से सजा हुआ था उनका व्यक्तित्व। बहुत बड़ी-बड़ी बातें नहीं, बहुत बड़े-बड़े वादे नहीं बल्कि जीवन के छोटे-छोटे कार्यों को ही सहजता, सरलता व प्रेम से करना उनकी खासियत थी। जितने भी लोग उनके सम्पर्क में आते वे उनकी सहज मुस्कान और सरल व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना न रहते थे और वे जितने भी लोगों के सम्पर्क में आती थीं, सभी के लिए मदद करने की इच्छा व ममता उनके अन्तर में समाहित रहती थी। ऐसी दिव्यात्मा सभी पुत्रवधुओं को प्राप्त हो, ऐसी प्रभु से कामना करती हुई पूज्या माँ के चरणों में निम्न भाव-प्रसून अर्पित कर रही हूँ।'-

एक-एक फूल पिरोया तुमने, बड़े जतन से बड़े यतन से, बनाई सुन्दर जीवन-माल, तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।
जीवन धूप में जब जब त्रस्त होते, तब-तब स्नेह छाया दी तुमने, बनकर एक तरुवर विशाल, तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।
तन का सुख न होने पर भी, बनकर सजग प्रहरी तुम, करतीं रहीं सबकी देखभाल, तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।
कटु वचनों से तुम दूर सदा, प्रेम, मधुरता, शीतलता, अपनापन वाणी में तुमने रखा संभाल, तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम। (जया आर्य)

धन्य है वह माँ जिसकी पुत्रवधू के ये उद्गार एक उत्कृष्ट परिवार के उच्च वैदिक संस्कारों को उजागर करते हैं। इस परिवार ने शोकग्रस्त होते हुए भी पूज्य माताजी का नेत्रदान और देहदान करके समाज के लिए जो प्रशंसनीय और अनुकरणीय कदम लिया है उसके लिये हम उन्हें नमन करते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि स्व. श्रीमती ब्रजलता आर्य के परिवार में पूर्व से ही विद्यमान धार्मिक विचारों को और भी अधिक दृढ़ता प्रदान करें तथा दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं सम्पूर्ण परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें। इस दिवंगत पुण्यात्मा की स्मृति न केवल इस परिवार में अपितु पूरे आर्यजगत् में स्थायी रहे, ऐसी कामनाओं के साथ न्यास परिवार अपनी हार्दिक सम्वेदना प्रगट करता है।

- अशोक आर्य
कार्यकारी अध्यक्ष

हलचल

फतवा-फोटोग्राफी खिंचवाना पाप है।

प्रसिद्ध इस्लामिक विद्यालय 'दारूल उलम देवबन्द' के उपकुलपति मुफ्ती अब्दुल कासिम लोमानी ने फतवा दिया है कि फोटोग्राफी इस्लाम के विरुद्ध है। इस्लाम के अनुसार यह अवैध और पाप है। जब लोमानी से यह पूछा गया कि सउदी अरब के द्वारा जब पवित्र मक्का व मदीना में भी फोटोग्राफी स्वीकृत है तथा वहाँ के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण भी होता है तो लोमानी ने कहा कि उन्हें ऐसा करने दो पर हम इसको स्वीकृत नहीं करते। ऐसे कथन और सोच की उपादेयता चिन्त्य है।

वैदिक विरक्त सम्मेलन २२ से २३ मार्च २०१४

वैदिक मिशन मुम्बई के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के सौजन्य से दिनांक २२ व २३ मार्च २०१४ को स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, दिल्ली की अध्यक्षता में आर्य समाज, सान्ताक्रुज मुम्बई में ऋषि दयानन्द व उनकी वृहद्त्रयी के विषय में संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है जिसमें स्वामी आर्यवेश जी-दिल्ली, स्वामी धर्मानन्द जी-उड़ीसा, स्वामी विवेकानन्द जी-मेरठ विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इस संगोष्ठी में भारत के लगभग ५० संन्यासी, महात्मा एवं वैदिक विद्वान् भाग ले रहे हैं। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका एवं संस्कार विधि में वर्णित विषयों की महत्ता, उपयोगिता व इनके प्रचार-प्रसार के विविध उपायों के विषय में गहन चिन्तन किया जायेगा। यह अति व्ययसाध्य कार्य आपके आर्थिक सहयोग से ही सम्पन्न हो सकेगा। कृपया इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें। सहयोग राशि वैदिक मिशन मुम्बई के नाम से चैक व डी.डी. से भेजने का श्रम करें। वैदिक मिशन मुम्बई को ८० जी आयकर छूट का प्रमाण पत्र प्राप्त है। -सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष, वैदिक मिशन, मुम्बई

श्री काश्मीरी लाल जी का निधन

न्यास अध्यक्ष कर्मयोगी, दानवीर श्री महाशय धर्मपाल जी के दामाद श्री काश्मीरी लाल जी के निधन का स्तब्ध कर देने वाला समाचार मिला। अत्यंत गहन पीड़ा की अनुभूति हुई। श्री कश्मीरी लाल जी का निधन ६५ वर्ष की आयु में दिनांक १३-१-१४ को हो गया। मनुष्य अल्पज्ञ है किसको कब आना है-कब जाना है, यह विधि का अटल विधान है। हमें स्वीकार करना ही है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। दुःख की इस घड़ी में न्यास परिवार एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक संवेदना।

– अशोक आर्य

दशहरा मेला, कोटा में वेदप्रचार

दिनांक १७ अक्टूबर से ९ नवम्बर २०१३ तक महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कोटा के तत्वावधान में कोटा के भव्य दशहरा मेला के अवसर पर महर्षि दयानन्द के जीवनदर्शन, वैदिक साहित्य एवं सामाजिक जागरूकता के पोस्टरों की भव्य प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी का शुभारम्भ आर्य शिरोमणि श्री पूनम सूरी जी ने किया।

– आर्य अरविन्द पाण्डे, प्रधान

प्रतिस्वर

माननीय अशोक जी, आप द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ सौरभ पत्रिका नवम्बर की प्राप्त हुई। आज १००/- का मनीऑर्डर आपकी सेवा में भेज दिया है। पत्रिका का स्वरूप आर्य सिद्धान्तों से पूर्ण मेल खाता है। ऋषिवर दयानन्द की कृपा का प्रसाद सदा मिलता रहे। आर्य लेखनी रुकनी नहीं चाहिए।

– भद्रसेन आर्य (व्यख्याता), विजयनगर

वैदिक संस्कृति में पल्लवित आर्यजनों के लिए उदयपुर का नवलखा महल भी तीर्थ स्थान है। आर्य समाज कृष्णपोल बाजार के मन्त्री कमलेश शर्मा जी ने उदयपुर प्रवास किया। सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर के सभी पदाधिकारीगण साधुवाद के पात्र हैं जिनके समर्पणभावों से 'दयानन्द दर्शन' का चित्रण कुशलतापूर्वक कराया गया है।

– ओ. पी. वर्मा, जयपुर

आदरणीय अशोक जी, सत्यार्थ सौरभ सुभग अंक मिलते रहते हैं। पढ़कर मन सुमन खिलते रहते हैं। समग्र सामग्री पठनीय सारगर्भित एवं ज्ञानवर्द्धक हुआ करती है। एक से दो का छन्द के माध्यम से आपको नववर्ष की मंगलकामना प्रस्तुत कर रहा हूँ।

नवल वर्ष, नव सौगातें लाये,
नित फूल खिलाये, ज्योति जगाये,
अंधियार नसाये, सत्यपंथ दर्शाये।

– डॉ. मिर्जा हसन नासिर

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा मकर संक्रान्ति पर्व दयानन्द धाम, ईसवाल में हर्षोल्लास से मनाया गया

यज्ञोपरान्त उमंग से भरपूर महिलाएँ व बच्चे सतोलिया खेलते हुये। महिलाओं में कुर्सी दौड़ का आयोजन भी हुआ।

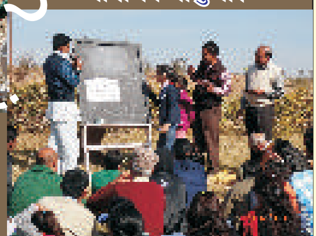

न्यास द्वारा विकसित वैदिक हाउजी (खेल-खेल में याद करें परमेश्वर के विभिन्न नाम) खिलाते हुए पं. नवनीत आर्य

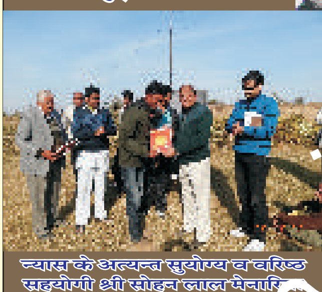

क्रिकेट स्पर्धा के पुरस्कार वितरित करते हुए श्री श्री अशोक आर्य

न्यास के अत्यन्त सुयोग्य व वरिष्ठ सहयोगी श्री सोहन लाल मेनारि के 83 वर्ष पूरे करने पर- अवकाश प्राप्ति अवसर पर सम्मान करते हुए श्री नारायण मित्तल

6, 9, 11

अभिमन्यु कुमार खुल्लर

यह शीर्षक मुझे मिला महाराष्ट्र के भण्डारा जिले की तीन बच्चियों से जिनके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया और फिर मारकर कुए में फेंक दिया गया। उनकी वही आयु थी। पीड़ा हुई, अतीव पीड़ा हुई, यह सोचकर कि अदम्य कामवासना के वशीभूत होकर बलात्कार किया गया और संभावित परिणाम की आशंका से सबूत क्या, पात्रों को ही मौत के घाट उतार देने में न भय लगा, न शंका हुई और न लज्जा लगी। पापकर्म से रोकने की इन ईश्वरप्रदत्त चेतावनियों को जैसे इन लोगों ने सुना ही नहीं। कामासक्त होकर पशु भी ऐसा व्यवहार करते हुए न तो देखे गए, न पढ़ने में आए और न ही सुने गए। केवल यही एक उदाहरण नहीं है। यदि मैं संकलित सभी उदाहरणों का उल्लेख करूँ तो अनेक पृष्ठ भर जावेंगे और वीभत्सता की सडांध लेख में से निकलने लगेगी। समाचारपत्रों में और दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सभी चैनलों पर इस तरह के समाचारों में दिन-रात वृद्धि हो रही है।

दामिनी बलात्कार काण्ड, निर्भया बलात्कार पूरे देश को हिला चुका है। विश्व मीडिया में इसकी गूँज हो चुकी है। बड़े तगड़े

आन्दोलन के फलस्वरूप केन्द्र सरकार को पहिले अध्यादेश लाना पड़ा और अब संसद इस बिल को पारित कर चुकी है। पहले की अपेक्षा अब रेप (बलात्कार) की परिभाषा का दायरा बढ़ा दिया गया है और सजा भी। बलात्कारी को फाँसी दिए जाने का प्रावधान रखने की माँग सभी तरफ से जोर-शोर से उठी थी पर इस प्रकरण पर विचार करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय के सवोनिवृत्त माननीय मुख्य न्यायाधीश श्री वर्मा जी की समिति ने 'आजीवन कारावास' की सजा बिना पैरोल दिए जाने की सिफारिश की थी। मुझे भी लगा कि माननीय वर्मा जी पूरे देश में चल रहे आन्दोलनों, प्रदर्शनों और जनता की माँग से इतने बेखबर हैं कि 'सजा-ए-मौत' की सिफारिश भी नहीं की। कुछ समय गंभीरता से सोचने पर समझ में आया कि ट्रायल कोर्ट (सबसे निचली अदालत) से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक की लम्बी कानूनी प्रक्रिया, जिसमें वर्षों लग जाते हैं, के पश्चात् ही हत्या के अपराधी को जिसमें प्रत्येक न्यायालय यह सुनिश्चित करने पर ही फाँसी की सजा देता है कि अपराध rarest of rare (जघन्य अपराध से भी जघन्यतम) श्रेणी का है। अपराधी को एक अवसर मिलता है कि वह राष्ट्रपति के पास प्राण-भिक्षा की याचना करे। प्रत्येक अपराधी प्राण भिक्षा की याचना करता है। प्राणभिक्षा की याचना पर राष्ट्रपति महोदय को स्वविवेक से निर्णय करने का अधिकार है। लेकिन संवैधानिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत राष्ट्रपति दया की याचना केन्द्रीय गृह मंत्रालय को भेजता है और केन्द्रीय गृह मंत्रालय राज्य शासन को भेजता है जहाँ अपराध घटित हुआ हो। राज्य शासन विचार करता है और अपनी अनुशंसा केन्द्र को भेजता है। केन्द्रीय गृह मंत्रालय राज्य शासन की अनुशंसा पर विचार कर अपनी अनुशंसा राष्ट्रपति को भेजता है। इस पर पूरी प्रशासनिक प्रक्रिया में अनेक वर्ष लगते हैं। स्वविवेक से क्या निर्णय लेते हैं- यह समस्त आलोचनाओं से ऊपर की चीज है। आश्चर्य हुआ कि एक राष्ट्रपति ने उनके समक्ष प्रस्तुत किए गए बारह प्राणदण्ड अभियुक्तों में से किसी को भी प्राणदण्ड की सजा नहीं दी। न्यायाधीश वर्मा जी की अनुशंसा का रहस्य समझ में आ गया। यह भी समझ में आ गया कि फाँसी से ज्यादा भयानक, कष्टकारक तिल-तिल की मौत है जो क्षणिक कामवासना की तृप्ति के उन्माद के कारण अपराधी जीवन भर भोगता रहेगा।

मेरे लिए मामला यहीं खत्म नहीं हुआ। मैं समाचारपत्रों से कटिंग करता रहा। न्यूज चैनलों की खबरों को संकलित करता रहा। दामिनी बलात्कार काण्ड के बाद बलात्कार की घटनाओं की जैसे बाढ़ सी आ गई। आईबीएन ७ के दिनांक ७ मार्च २०१३ के सामाचार में बताया गया कि दिल्ली में प्रतिदिन 'रेप की चार घटनाएँ होती हैं। चीन ने तो दिल्ली को रेप की राजधानी ही बता दिया। घटनाओं में वृद्धि का कारण मीडिया का भय हो सकता है। यदि पुलिस ने कार्यवाही नहीं की और खबर मीडिया को मिल गई तो संबंधित अधिकारियों की खैर नहीं।

मैं जानना चाहता हूँ। सख्त कानून पास होने से, मीडिया में बलात्कारियों की दुर्गति से, न्यायालयों में लम्बी व कानून की कड़ी प्रक्रियाओं में से गुजरने की आशंका से और इससे पहले पुलिस के सत्कार के भय से जनमानस में इस दुष्कृति के प्रति कोई विराग का वातावरण बन पाया है या भविष्य में बन सकेगा? मुझे लगता है कि नहीं। क्यों? इसलिए कि मनुष्य जिन संवेगों से बना है उनका क्रम काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद,

मत्सर बहुत प्राचीन काल से ही मनीषियों ने निर्धारित कर दिया है। इनमें प्रथम स्थान 'काम' को दिया है।

काम का साधारण अर्थ, कामना, इच्छा है। परन्तु जिस कामना को नियंत्रित करने का उपदेश दिया जाता है, वह सामान्य कामना या इच्छा नहीं है। काम के आगे वासना जोड़ने से अर्थ कुछ स्पष्ट होता है। कामवासना का शब्दकोषीय अर्थ वासना का निवास या घर होता है। यदि कामवासना को रूढ़ रूप देकर 'जननेन्द्रिय-जन्य उत्तेजना का अर्थ दिया जाए तभी ठोस अर्थ मिलता है। इसी अर्थ में हम शब्द का उपयोग करेंगे। गीता के अनेक श्लोकों में इसकी विकरालता का वर्णन है।

श्री कृष्ण महाराज ने काम को ज्ञान का ढकनेवाला तथा व्यक्ति का महावैरी कहा है। जैसे धुएँ से अग्नि, मल से दर्पण तथा जेर से गर्भ ढँका रहता है वैसे ही इस काम के द्वारा ज्ञान ढका हुआ है। यह काम 'दुष्पूर' है, 'अनल' है। दुष्पूर-जिसे कभी तृप्त नहीं किया जा सके, अनल अर्थात् आग। काम सब कुछ

भस्मीभूत कर देता है- अक्ल (बुद्धि) को सबसे पहले।

पौराणिक कथानकों में स्वर्ग के राजा इन्द्र, पृथ्वी पर ऋषियों की तपस्या के प्रभाव से अपने सिंहासन को डोलता हुआ अनुभव कर उनकी तपस्या भंग कराने के लिए रम्भा, मेनका जैसी अप्सराओं का उपयोग करते थे।

ये अपसराएँ सफल भी होती थीं। विरोधी राजा की हत्या कराने के लिए विष-कन्याओं का उपयोग किया जाता था। महायुद्धों में गुप्त जानकारी प्राप्त करने के लिए रमणियों का उपयोग किया जाता रहा। 'माताहारी' का नाम सबसे अधिक विख्यात् है।

'गीता' और 'इन्द्र' का उदाहरण 'कामवासना' की दुर्दमनीयता को प्रदर्शित करता है और ये तथ्य श्रेष्ठ बौद्धिक वर्ग के व्यक्तियों के समक्ष प्रस्तुत किए गए थे। सामान्य, अतिसामान्य व्यक्तियों के समक्ष नहीं बताए गए थे जिनका विवेक इतना जाग्रत नहीं होता कि नीर-क्षीर का विभेद कर 'संयम' की बात सोचें। उनके लिए काम का उद्वेग, सामान्य भूख-प्यास से अधिक नहीं और जिसकी सन्तुष्टि भी भूख प्यास की सन्तुष्टि जैसी ही शीघ्र और कैसे भी होनी चाहिए। पचास वर्ष से भी पूर्व कानपुर की एक घटना का स्मरण हो आया। एक व्यक्ति इतना अधिक कामातुर हो गया कि दिन दहाड़े, बीच बाजार में उसने एक अज्ञात लड़की को पकड़ लिया। लोगों को उन पर चादर डालनी पड़ी

विचार प्रवाह महर्षि दयानन्द की ओर मुड़ गया। संन्यासी शिष्य स्वामी दयानन्द मथुरा के छत्ते बाजार से गुजरते हुए यमुना के किनारे जाते और जल भर के लाते। आते जाते समय दृष्टि सदैव जमीन पर होती। यह भी उनकी ख्याति का कारण बनी। संभवतया, नहीं-नहीं, निश्चित रूप से महर्षि ने किसी भी नारी की आँखों में आँखें डालकर जीवनपर्यन्त नहीं देखा। महर्षि के बारे में 'कुलभूमि' मासिक सितम्बर २००७ में लिखा था कि महर्षि घंटों सिद्धासन पर बैठते थे। यह आसन वीर्य-प्रवाह वाली नाड़ी को नियंत्रित करता था और 'मालकंगनी' औषधि का भी सेवन इसी हेतु करते थे। महर्षि एक समय भोजन करते थे, शुद्ध शाकाहारी स्वादिष्ट और रात्रि में दुग्धपान, फलादि। २४ घंटों का पूरा-पूरा समय विभाजन कर रखा था और उसका सख्ती से पालन करते थे- अन्यथा सोच विचार के लिए उनके पास समय ही नहीं था, यही तो उत्तर दिया था कलकत्ते के युवक को जिसने महर्षि से प्रश्न किया था कि कामवासना ने उन्हें कभी सताया अथवा नहीं?

महर्षि के जीवनीकार देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने (पृष्ठ ५७०) एक घटना का उल्लेख किया है। एक दिन एक सेठजी आए उनका दस वर्षीय पुत्र भी उनके साथ था। वह अत्यन्त लज्जालु था। किसी प्रकार महाराज ने उसे अपने पास बुलाया और उसे कहा कि 'तुम नित्य सुबह उठकर और हाथ मुँह धोकर अपने माता-पिता को नमस्ते किया करो और पाठशाला जाते समय अपनी पुस्तकें स्वयं ले जाया करो, नौकर को मत ले जाने दो। यदि मार्ग में कोई स्त्री तुम्हें मिल जाए तो उसकी ओर दृष्टि जमा कर मत देखो, अपनी दृष्टि नीची कर लो नहीं तो उस स्त्री की आकृति तुम्हारे मन में घुसकर एक प्रकार की उष्णता उत्पन्न करेगी और तुम्हें धातुक्षीणता का रोग हो जायेगा जिससे तुम्हारा बहुत अनिष्ट होगा।'

गौर फरमाइये! महर्षि दयानन्द ने यह उपदेश दस साल के लड़के को दिया। यह मानना मुश्किल ही होगा कि इस आयु का बालक कामवासना का क, ख, ग भी जानता होगा। फिर भी महर्षि की चिन्ता थी कि स्त्री पुरुष के नेत्रों के मिलने से कामवासना की छवि बालक के मन पर भी बैठ सकती है।

आज हम कहाँ हैं? दिन रात सैक्स परोसा जा रहा है। पूरी बाहू के ब्लाउज और साड़ियों से ढकी तनवाली फिल्मी नायिकाएँ अब दो चिन्दियों में आ गई हैं। टीवी चैनल्स पर भी यही सब कुछ देखने को मिल रहा है। इस पर तुर्रा यह कि आइटम सांग (item song) के नाम पर फिल्मों में यह सब कुछ परोसा जा रहा है जो वेश्यालयों में भी फिल्मों से ही पहुँचता है। इन गानों के बोल भी अश्लीलार्थक हैं। जब चौबीसों घण्टे, सिनेमा के पर्दे और टीवी पर यह परोसा जा रहा हो तो हम कैसे उम्मीद करें कि बच्चे गायत्री मंत्र का जाप करेंगे?

अपवादों को छोड़कर हम सामान्यजन मांसभक्षी (नारी) हो गए हैं। नई पीढ़ी के युवक युवतियों को इन्टरनेट के माध्यम से पूरा काम शास्त्र उपलब्ध है। अब मोबाइल पर भी इन्टरनेट उपलब्ध है। लुक छुप कर, डर कर देखने की जरूरत नहीं है। कभी भी देखा जा सकता है।

कामवासना खुद आग है, उसमें घी डालने वाली एक दो बातों का उल्लेख और करूँगा। केन्द्रीय सरकार आन्दोलनों के आगे घुटने टेककर बलात्कार के विरुद्ध अध्यादेश लाई और फिर फटाफट संसद में कानून पारित करा दिया। न तो केन्द्र सरकार और न ही राज्य सरकारें 'नशाबन्दी' के लिए सख्त कदम उठाने के लिए तैयार हैं। कारण स्पष्ट है कि यह मद ऐसा है जिसमें अरबों रुपये की आय होती है और इस मद पर टैक्स बढ़ाने के विरुद्ध कभी कोई जन आन्दोलन नहीं होता। यही स्थिति धूम्रपान की भी है। शासन ने अपने उत्तरदायित्व की इतिश्री वैधानिक चेतावनी-धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है', अंकित कराकर दे दी। रही भोजन की बात उत्तर भारत में कचौड़ी समोसे एवं अन्य गरिष्ठ भोजन की दुकानों की भरमार है। मांस मछली युक्त पकवान व फास्ट फूड जमकर उपलब्ध हैं और जमकर खाये जाते हैं। पढ़े-लिखे युवावर्ग में 'रेव पार्टियों' का प्रचलन तीव्रता से बढ़ा है और बढ़ रहा है। आज भी युवा पीढ़ी फिल्मी सितारों को अपना आदर्श मानती है इसलिए अश्लील से अश्लीलतम होते जा रहे विज्ञापनों में प्रसिद्ध मॉडल तथा हीरो हीरोइन होते हैं। स्थानीय समाचार पत्रों में कामवृद्धि में सहायक तेल और अन्य दवाइयों के विज्ञापन भरे रहते हैं। रही ड्रग्स नशीली दवाइयों की बात। उसका व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैला है। खिलाड़ी भी इनका उपभोग करते हुए समाचारों में आये दिन उपलब्ध रहते हैं।

अब मैं उन समाचारों की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा जिन्होंने मेरी विचारतंत्री को जड़ से हिला दिया, और इस विषय पर लिखने को मजबूर किया।

१.टाइम्स ऑफ इंडिया, दिल्ली ३१.१२.१२ तथा दैनिक भास्कर, ग्वालियर के ३१.१२.१२ में समाचार प्रकाशित हुआ है कि 'महाराष्ट्र के थाने जिले के डॉम्बीविली नगर के पुत्र व पिता को १६ साल की पुत्री के साथ लगातार दो वर्ष तक दुष्कर्म करने के कारण गिरफ्तार किया गया।

२.नई दुनिया ग्वालियर ६ मार्च २०१३- रात्रि में प्रसूति कराने के लिए ले जाई जा रही ६३ वर्षीय नर्स के साथ चार लोगों ने बलात्कार किया।

३. नई दुनिया, ग्वालियर ७ मार्च २०१३- नाबालिग से किया पाँच नाबालिग छात्रों ने दुष्कृत्य। छात्रा १३ वर्ष, दुष्कृत्य करने वाले छात्र ११ से १४ वर्ष।

४. १५ वर्षीय किशोरी का एक साल तक दैहिक शोषण किया एक २३ वर्षीय युवक ने।

५. मध्यप्रदेश में पाँच हजार लड़कियाँ गायब।

६. उत्तर भारत में सुरक्षित नहीं महिलाएँ आदि।

७. ४ अप्रैल २०१३ को सभी चैनलों पर रात्रिकालीन न्यूज बुलेटिन में यह समाचार आया कि गुडगाँव हरियाणा का ४५ वर्षीय करोड़पति ट्रान्सपोर्टर पिछले तीन वर्ष से अपनी सोलह वर्षीय पुत्री के साथ यौनाचार करता रहा। विद्यालय की प्राचार्या को सुबकते हुए लड़की ने आपबीती बताई। प्राचार्य की शिकायत पर पुलिस ने जाँच पड़ताल की और पिता को गिरफ्तार किया।

देश की जनसंख्या १२० करोड़ से भी बढ़ गई है। सही आंकड़े प्रस्तुत करना मुश्किल है फिर भी ५०-६० करोड़ के लगभग युवक युवतियाँ नई सोच वाले व कामवासना नियंत्रण (ब्रह्मचर्य-वीर्यरक्षा, सैक्स से परहेज) को एक टैब्बू-दकियानूसी विचार समझते हैं। सफलतापूर्वक सैक्सुअल लाइफ बिताई जा सकती है,यह कार्य व्यापार महानगरों में काफी लम्बे समय पूर्व से धड़ल्ले से चल रहा है। कन्डोम व पिल्स का प्रचलन वैवाहिकों से ज्यादा बिन-ब्याहों में है। मध्यस्तरीय नगर भी इससे अछूते नहीं है। हमारे ग्वालियर में ही यूनिवर्सिटी के बाहर की चाय आदि की दुकानों के पिछवाड़े मौज-मस्ती करने के अड्डे बने हुए हैं, जिनका भंडाफोड कुछ वर्षों पूर्व हुआ था। अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित बहुत बड़ा वर्ग है जो रोजी-रोटी की जुगाड़ में पूरी जिन्दगी खपा देता है। नैतिकता-अनैतिकता उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाती। उद्दाम कामवासना का नियंत्रण करना चाहिए, उनकी समझ से बाहर की बात है।

यह है समस्या की जमीनी हकीकत। इसके एकाध पक्ष की चर्चा यदा कदा होती रहती है। शरीर का कैन्सर व्यक्तिगत होता है- समाज का कैन्सर अत्यधिक विस्तृत ५०-६० करोड़ में फैलता हुआ। बुरी तरह त्रसित समाज इससे मुक्ति के लिए फड़फड़ा रहा है। भारतीय समाज के उस वर्ग को जिसमें बुद्धिजीवी विद्वान् व संन्यासी आते हैं, सोचना चाहिए कि इस क्षेत्र में उनका ही सर्वोपरि दायित्व है। उन्हें मार्गदर्शन करना है, संगठित कर जनजागरण के कार्यक्रम चलाना है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों की शिक्षा का समावेश अनिवार्य रूप से होना चाहिए। हाईस्कूल की शिक्षा तक बुराईयों अपराधों के परिणामों के बारे में सजग करना चाहिए। मेरी समझ में अब तक ऐसी किसी पहल का श्रीगणेश भी नहीं हुआ है। निकट भविष्य में संभावना कम ही दिखती है। जैसा चल रहा है चलने दो। हमें क्या पड़ी? यही सोच आम आदमी की है और विद्वानों व संन्यासियों की भी।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
२२ नगर निगम क्वार्टस, जीवाजीगंज, लश्कर,
ग्वालियर ४७४००१ (मध्यप्रदेश), दूरभाष ०७५१-२४२५९३१

मोदी की पगड़ी में सुरखाब का पंख

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

नरेन्द्र मोदी की पगड़ी में सुरखाब का एक पंख और लग गया है। अभी उनके दाहिने हाथ अमित शाह बरी हुए ही थे कि अब उन पर लगे आरोपों को अहमदाबाद की मेट्रोपोलिटन अदालत ने भी रद्द कर दिया। दूसरे शब्दों में गुजरात के मुख्यमंत्री मोदी निर्दोष हैं, उन्होंने २००२ में गुलबर्ग सोसायटी में हत्या नहीं करवाईं और उन्होंने दंगे रोकने में लापरवाही नहीं की, इस बात पर अब दोहरी मोहर लग गई।

सर्वोच्च न्यायालय ने विशेष जाँच दल बिठाया था। उसने सात साल लगाए, चार हजार लोगों की गवाही ली और हजारों दस्तावेज खंगाले। उसके बाद उसने मोदी को निर्दोष ठहराया, लेकिन इससे जकिया जाफरी सहमत नहीं थीं। वे खुद अहमदाबाद की गुलबर्ग सोसायटी में रहती थीं और उनकी आँखों के सामने उनके पति अहसान जाफरी और अन्य ६८ लोगों की भीड़ ने हत्या कर दी थी। जकिया की प्रार्थना स्वीकार कर सर्वोच्च न्यायालय ने विशेष जाँच समिति की रिपोर्ट को दुबारा विचारार्थ अदालत में भेज दिया था। जकिया के पति कांग्रेस की ओर से सांसद भी रह चुके थे। जो लोग सोच रहे थे कि गुलबर्ग सोसायटी हत्याकांड में मोदी फँस जाएँगे, उन्हें काफी निराशा होगी। वे लोग अब भी जकिया जाफरी का पीछा नहीं छोड़ेंगे। वे उन्हें उकसाए बिना नहीं रहेंगे। उनका मकसद गुलबर्ग सोसायटी के असली हत्यारों को पकड़वाना नहीं है बल्कि यह है कि किसी भी तरह हत्याकांड के तार मोदी से जुड़ जाएँ ताकि वे अपनी राजनीतिक पूरियाँ मजे से तल सकें।

विरोधियों को फँसाने के लिए लगाए आरोप दूसरे आरोपों को भी ढेर कर देते हैं और असल अपराधी बच जाते हैं

गुलबर्ग सोसायटी में खून के फव्वारे छुड़ाने वाले अपराधियों को कानून के हवाले करवाना सर्वथा उचित है और जकिया जाफरी के प्रति हार्दिक सहानुभूति होना भी बिलकुल स्वाभाविक है, लेकिन मुख्यमंत्री या किसी मंत्री को तो कठघरे में तभी खड़ा किया जा सकता है जबकि उसके विरुद्ध अकाट्य प्रमाण उपलब्ध हों। हम राजनीतिक दृष्टि से देखें और नैतिक जिम्मेदारी तय करने बैठें तो राज्य में होने वाली हर घटना के लिए मुख्यमंत्री या मंत्रियों को जिम्मेदार ठहरा सकते हैं, लेकिन उन्हें अपराधी या दोषी ठहराना हो तो हमें ठोस प्रमाण देने होंगे।

जो प्रमाण विशेष जाँच दल के सामने रखे गए और जो अहमदाबाद की मेट्रोपॉलिटन अदालत के सामने पेश किए गए, वे प्रमाण कम, आरोप ज्यादा थे और वे तथ्य कम, अनुमान ज्यादा थे। उन सबको एक-एक करके अदालत ने ध्वस्त कर दिया। उसके पहले जाँच समिति ने उन्हें निराधार पाया। अप्रैल में आई जाँच समिति की रपट में साफ-साफ कहा गया था कि कई अरोप अनर्गल थे। जिन पुलिस अफसरों ने मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी पर यह अरोप लगाया था कि उन्होंने उच्चस्तरीय बैठक में 'हिन्दुओं को अपना गुस्सा निकालने' की छूट का समर्थन किया था, वे अफसर २७ फरवरी २००२ की उस बैठक में मौजूद ही नहीं थे। यह आरोप भी सच्चाई को झुठलाता है कि दंगे भड़काकर मोदी हाथ धरकर बैठ गए। उन्होंने पुलिस को नहीं दौड़ाया।

जाँच समिति ने सप्रमाण नोट किया कि मोदी ने २८ फरवरी को ही फौज को बुला लिया था। पुलिस विभाग से निकले रिकॉर्ड और पुलिस वालों की गवाही से पता चलता है कि उन्हें दंगा रोकने के लिए जरूरी हिदायतें दी गई थीं। अदालत ने मोदी के इस निर्णय को भी ठीक बताया कि उन्होंने गोधरा में जिंदा जले कार-सेवकों की लाशों को अहमदाबाद लाने का इंतजाम किया। उनमें से ज्यादातर अहमदाबाद के ही लोग थे। यदि सरकार उन लाशों को लाने का इंतजाम नहीं करती तो उसे उसकी पत्थरदिली या क्रूरता कहा जाता और व्यक्तिशः लाशें अहमदाबाद लाई जातीं तो उसका सदमा और गुस्सा कहीं अधिक भयानक होता।

लाशें अहमदाबाद आईं, इस कारण लोग उत्तेजित जरूर हुए, लेकिन जाँच समिति ने पर्याप्त खोज-बीन करने के बाद कहा है कि यह सरासर झूठ है कि उन लाशों का शहर में जुलूस निकाला गया। प्रकरण संबंधी जाँच समिति इस तरह कई आरोपों की गहराई में गई और उसने पाया कि आरोपों में बताई गई घटनाएँ घटी जरूर हैं, लेकिन आरोप लगाने वाले लोगों ने कोई ठोस प्रमाण नहीं दिए। ऐसे में क्या ही अच्छा होता कि गुजरात के इस ग्यारह साल पुराने दुखद और शर्मनाक अध्याय को इस रपट के साथ ही भुलाने की कोशिश की जाती, लेकिन राजनीतिक दुराग्रह इतना विकट होता है कि उसके कारण असली हत्यारे तो आज तक पकड़े नहीं गए, उन्हें कोई सजा तक नहीं मिली और काल्पनिक हत्यारों की खोज में लोग पागल हुए जा रहे हैं। पागलपन इस हद तक बढ़ गया है कि किसी लड़की के फोन-टेप करने के मामले को हमारी केंद्र सरकार ने जीवन-मरण का प्रश्न बना लिया है। यदि यह मामला, मान लें कि गुजरात सरकार के खिलाफ सिद्ध हो जाए तो भी क्या वह

प्रदेश में कांग्रेस को डूबने से बचा सकता है?

काल्पनिक हत्यारों की खोज में मुकदमेबाज लोगों ने अपना संतुलन कैसे खोया, इसका प्रमाण अदालत के निर्णय से मिलता है। अदालत ने कहा है कि गुलबर्ग सोसायटी में हुए हत्याकांड के लिए 'जातीय नरसंहार' और 'सामूहिक हत्या' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये शब्द विदेशी मूल के हैं। ग्रीक और लेटिन के हैं। इनका प्रयोग हिटलर और स्टालिन के कृत्यों के लिए किया जाता है। इनका इस्तेमाल गुजरात में कैसे किया जा सकता है? अदालत का कहना सही है, क्योंकि हिटलर व स्टालिन के दौर में लाखों लोग मारे गए थे। विशेष जाँच समिति ने अपनी रपट में यह भी पूछा था कि अहसान जाफरी ने भीड़ को उकसाया नहीं होगा? भीड़ की इस प्रतिक्रिया को क्या एकतरफा जातीय नरसंहार कहा जा सकता है? जातीय नरसंहार तो एकतरफा होता है, बहुत पहले से सुनियोजित होता है और वह बिना किसी उत्तेजना के ही किया जाता है। इसके विपरीत जाँच समिति ने पाया कि मोदी ने दूरदर्शन पर नियमित रूप से शांति की अपीलें कीं। अदालत ने इस अनर्गल आरोप को भी सिरे से खारिज कर दिया कि गोधरा में ट्रेन में आग लगवाने का काम भी गुजरात सरकार ने करवाया। यह उसकी साजिश थी। यह आरोप अपने आप में इतना बेहूदा और मूर्खतापूण है कि आरोप लगाने वालों की बुद्धि पर तरस खाया जा सकता है। जो दूसरे आरोप लगाए गए हैं, वे इस लायक तो हैं कि उनकी सच्चाई जाँचकर देखी जा सके, लेकिन यह आरोप तो उस षड्यंत्रकारी दिमाग का पता देता है, जो अपने विरोधियों को फँसाने में लगा है। और विरोधी फँसे नहीं तो कम से कम उसे बदनाम तो कर ही दिया जाए, इस उद्देश्य में लगा हुआ है। इस तरह के आरोपों के कारण दूसरे आरोप भी अपने आप ढेर हो जाते हैं और असली अपराधी कानून की गिरफ्त से बच जाते हैं।

भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष

कथा सरित

हाल मस्त

राजा भोज वन में शिकार करने गए लेकिन घूमते हुए अपने सैनिकों से बिछुड़ गए और अकेले पड़ गए। वह एक वृक्ष के नीचे बैठकर सुस्ताने लगे। तभी उनके सामने से एक लकड़हारा सिर पर बोझा उठाए गुजरा। वह अपनी धुन में मस्त था। उसने राजा भोज को देखा पर प्रणाम करना तो दूर, तुरंत मुँह फेरकर जाने लगा।

भोज को उसके व्यवहार पर आश्चर्य हुआ। उन्होंने लकड़हारे को रोककर पूछा, 'तुम कौन हो?' लकड़हारे ने कहा, 'मैं अपने मन का राजा हूँ।' भोज ने पूछा, 'अगर तुम राजा हो तो तुम्हारी आमदनी भी बहुत होगी। कितना कमाते हो?' लकड़हारा बोला, 'मैं छह स्वर्ण मुद्राएँ रोज कमाता हूँ और आनन्द से रहता हूँ।' भोज ने पूछा, 'तुम इन मुद्राओं को खर्च कैसे करते हो?' लकड़हारे ने उत्तर दिया, 'मैं प्रतिदिन एक मुद्रा अपने ऋणदाता को देता हूँ। वह हैं मेरे माता पिता। उन्होंने मुझे पाल पोस कर बड़ा किया, मेरे लिए हर कष्ट सहा। दूसरी मुद्रा मैं अपने ग्राहक आसामी को देता हूँ, वह हैं मेरे बालक। मैं उन्हें यह ऋण इसलिए देता हूँ ताकि मेरे बूढ़े हो जाने पर वह मुझे इसे लौटाएँ।

तीसरी मुद्रा मैं अपने मंत्री को देता हूँ। भला पत्नी से अच्छा मंत्री कौन हो सकता है, जो राजा को उचित सलाह देता है ,सुख-दुख का साथी होता है। चौथी मुद्रा मैं खजाने में देता हूँ। पाँचवीं मुद्रा का उपयोग स्वयं के खाने पीने पर खर्च करता हूँ क्योंकि मैं अथक परिश्रम करता हूँ। छठी मुद्रा मैं अतिथि-सत्कार के लिए सुरक्षित रखता हूँ क्योंकि अतिथि कभी भी किसी भी समय आ सकता है। उसका सत्कार करना हमारा परम धर्म है।' राजा भोज सोचने लगे, 'मेरे पास तो लाखों मुद्राएँ हैं, पर जीवन के आनन्द से वंचित हूँ।' लकड़हारा जाने लगा तो बोला, 'राजन् मैं पहचान गया था कि तुम राजा भोज हो पर मुझे तुमसे क्या सरोकार।' भोज दंग रह गए।

संकलन- विजय कुमार सिंह

दयानन्दीय शिक्षा नीति और आधुनिक शिक्षा नीति पर तुलनात्मक विचार

- डॉ. रामकृष्ण कोटा

१. वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति का निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का सूत्र एक प्रमुख शिक्षा सूत्र है। संविधान के अनुच्छेद ४५ में भी आया है कि प्रत्येक १४ वर्ष तक के बालक के लिए निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना राज्य का प्रमुख कर्त्तव्य है। परन्तु महर्षि दयानन्द इस मायने में बहुत क्रान्तिकारी हैं। वे प्रारम्भ से आखिर तक शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य करने का निर्देश देते हैं और जो माता पिता अपने बच्चों को विद्यालय में शिक्षार्थ न भेजें तो ऐसे माता पिता को राज्य की ओर से दण्ड और सामाजिक बहिष्कार का दण्ड मिलने की व्यवस्था बनाना चाहते हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी दृष्टि में शिक्षा का कितना महत्व है।

२. महर्षि दयानन्द सहशिक्षा के प्रबल विरोधी और इस विषय में बहुत सख्त थे पर आज सहशिक्षा धड़ल्ले से चल रही है, जिसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं।

३. दयानन्दीय शिक्षा नीति में गरीब-अमीर, नीचे-ऊँचे और छोटे-बड़े का कोई भेदभाव नहीं है। पर वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति में सिद्धान्त रूप में कहने को बहुत कुछ है पर व्यवहार क्या है यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। शिक्षा इतनी मँहगी हो गई है कि साधनहीन माता पिता इसे जुटाने की हिम्मत ही नहीं कर सकते। आज गरीबी शिक्षा में अभिशाप है।

४. दयानन्दीय शिक्षा नीति ब्रह्मचर्यव्रत को अत्यधिक महत्व देती है जबकि वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति में उसका कोई महत्व नहीं है। शरीरोन्नति के नाम पर आधुनिक शिक्षा नीति में खेलकूद, व्यायाम आदि का समावेश किया गया है। स्वामी दयानन्द इन्हें व्यर्थ की क्रीड़ा मानते थे यह बात नहीं हैं परन्तु प्राणायाम आदि अष्टयोगों के द्वारा योगाभ्यास करके ब्रह्मचर्य व्रत के साथ शारीरिक शिक्षा को लागू करना स्वामीजी को अभीष्ट था क्योंकि इसी से शारीरिक के साथ साथ आत्मिक उन्नति भी संभव है।

५. दयानन्दीय शिक्षा प्रणाली व्रतशील केन्द्रित है जबकि वर्तमान भारतीय शिक्षा मात्र सूचना केन्द्रित है। जिसको प्राप्त करने के बाद छात्र नौकरी के पीछे पड़कर, न मिलने पर आलसी और बेकार हो जाता है।

६. धर्मशिक्षा का वर्तमान शिक्षा नीति में कोई स्थान नहीं है अपितु आज की शिक्षा पद्धति तो अपने को धर्मनिरपेक्ष ही कहती है।

७. पठन-पाठन की प्रणाली में शिक्षा के माध्यम अर्थात् हिन्दी भाषा के प्रश्न पर विचार करें तो आज सर्वत्र अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है जबकि दयानन्दीय शिक्षा नीति में अंग्रेजी पढ़ना अनिवार्य नहीं है। यह संस्कृत, हिन्दी और अन्य सहोदर भाषाओं को पूर्णतया विकसित करने की पक्षपाती है।

८. यों तो वर्तमान शिक्षा नीति सैद्धान्तिक दृष्टि से विद्यालय महाविद्यालय आदि नगर से दूर होना मानती है पर व्यवहार में जो दयनीय स्थिति है वह हमारे सामने है। इसके विपरीत दयानन्दीय शिक्षा नीति इस विषय में बहुत सख्त है।

९. दयानन्दीय शिक्षा नीति में अध्यापक मात्र एक वेतनभोगी राज्य कर्मचारी नहीं होता, अपितु उसका स्थान राष्ट्र निर्माता के रूप में माना जाकर वैसा ही सम्मान दिया जाता है परन्तु आज की स्थिति बहुत दयनीय है। लिखने में संकोच है। ट्यूशन के व्यवसाय ने अध्यापक का सर्वात्मना पतन कर दिया है।

१०. दयानन्दीय शिक्षा नीति में गुरु-शिष्य का उत्कृष्ट वैयक्तिक और पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित होता है। जबकि आज की भारतीय शिक्षा में सम्बन्ध तनावपूर्ण और व्यवसायिक हो गये हैं।

११. दयानन्दीय शिक्षा नीति का पाठ्यक्रम व्यक्ति को आत्मा से लेकर परमात्मा और पृथिवी से लेकर अन्तरिक्ष तक का समस्त ज्ञान करा देता है परन्तु आधुनिक शिक्षा नीति का पाठ्यक्रम मात्र स्वार्थपूर्ण भौतिकता का ही ज्ञान प्राप्त कराता है।

१२. दयानन्दीय शिक्षा नीति प्राचीन और नवीन ज्ञान के समन्वयात्मक सिद्धान्त पर आधारित है और अध्यात्मवाद और भौतिकवाद के समन्वय पर बल देती है। परन्तु वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति केवल ज्ञान-विज्ञान प्राप्त कराकर व्यक्ति को मात्र भौतिकवादी (अध्यात्म रहित) बना देती है।

१३. महर्षि दयानन्द प्रतिपादक शिक्षा जातिवाद मुक्त एवं स्वयंवर समर्थक समाज की आधारशिला रखती है। जबकि आधुनिक शिक्षा सामाजिक पुनर्निर्माण के विषय में युवक युवतियों को शिक्षाविहीन कर छोड़ देती है।

१४. दयानन्दीय शिक्षा नीति 'सादा जीवन उच्च विचार' की संस्थापक है पर वर्तमान भारतीय शिक्षा तड़क भड़क और फैशन परस्ती को बढ़ावा देती है।

१५. महर्षि द्वारा प्रतिपादित शिक्षा आदर्शवाद प्रकृतिवाद तथा यथार्थवाद के समन्वय पर आधारित है जबकि वर्तमान भारतीय शिक्षा पद्धति घोषणाओं में यथार्थवादी और व्यवहार में घोर अयथार्थवादी है।

१६. अन्त में इस तुलनात्मक विचार में शिक्षा की अर्थव्यवस्था पर विचार किया जाए तो कोठारी आयोग ने राष्ट्रीय आय की कम से कम ६ प्रतिशत धनराशि शिक्षा पर व्यय करने का सुझाव दिया था। १९८६ में नई शिक्षा नीति शिक्षा पर राष्ट्र की आय का कम से कम २० प्रति. व्यय करने का प्रावधान करती है।

स्वास्थ्य

उल्लास और उदासी ऐसी है बीमारी

बाइपोलर डिसऑर्डर के कारण पीड़ित व्यक्ति कभी अत्यधिक उल्लास की मनोदशा में तो कभी उदासी में चला जाता है। बहरहाल इस गंभीर मनोरोग को शिकस्त दी जा सकती है।

आमतौर पर भावनाएं हमारे माहौल, सुख-दुःख व तजुर्बों के अनुरूप हमें उल्लास या उदासी का अहसास कराती हैं, लेकिन बाइपोलर डिसऑर्डर मैनिक डिप्रेसिव साइकोसिस से ग्रस्त रोगी की भावनाओं में विकार पैदा हो जाता है। इस मनोरोग में रोगी अकारण ही कुछ समय चार से छह महीने के लिए गम्भीर रूप से उदास, हताश या डिप्रेशन की स्थिति में चला जाता है।

रोग यहीं थमता नहीं बल्कि कुछ समय के बाद रोगी की मनोदशा फिर से बदलती है। मनोदशा में बदलाव के कारण रोगी अचानक उदासी के ठीक विपरीत अत्यधिक उल्लासमय व स्फूर्तिवान महसूस करने लगता है।

कारण

अनुवांशिक रूप से होने वाला यह रोग १ से २ प्रतिशत लोगों को होता है। इस रोग की शुरूआत किशोरावस्था में ही हो जाती है। कभी उल्लसित होना और कभी उदासी या डिप्रेशन की स्थिति बार-बार सिलसिलेवार तरीके से जीवन भर भी चल सकती है।

मेनिया से सम्बन्धित लक्षण

मेनिया से यहाँ आशय मनारोगी के अतिउल्लसित होने से है, जिसके प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैंः-

१. रोगी को अचानक और अकारण असीमित शक्ति और उल्लास की अनुभूति होती है।

२. सच्चाई के विपरीत रोगी स्वयं को हैसियत या धन-दौलत से ताकतवर समझने लगता है।

३. रोग की गंभीर अवस्था में रोगी कभी-कभी स्वयं को ईश्वर या ईश्वर का दूत समझने लगता है।

४. अत्यधिक उत्तेजना के चलते रोगी सोना बंद कर देता है। वह घर से निकलकर पैसे बाँटता है, महंगी वस्तुएँ खरीदता है।

५. वह लोगों से अकारण ही मारपीट व तोड़फोड़ करता है।

६. मेनिया के बाद रोगी अनिश्चित समय कुछ महीनों से कुछ साल तक सामान्य रूप से ठीक रहता है।

डॉ. उन्नति कुमार

उदासी या डिप्रेशन के लक्षण

१. रोगी निराशाग्रस्त महसूस करता है और उसका किसी कार्य में मन नहीं लगता।

२. वह बेचैनी महसूस करता है और अकेला रहना पसन्द करता है। रोगी किसी से मिलने या बात करने में स्वयं को बोझिल महसूस करता है।

३. रोगी नकारात्मक विचारों से घिरा रहता है और स्वयं को असहाय महसूस करता है।

४. वही रोगी जो मेनिया की स्थिति के दौरान स्वयं को शक्तिशाली और ईश्वर समझ रहा होता है, अब वहीं डिप्रेशन की स्थिति में हताशा के चलते आत्महत्या तक की सोचने लगता है।

५. इलाज के अभाव में डिप्रेशन की यह मनोदशा ६ से ९ महीनों तक चल सकती है।

इलाज

१. मैनिक डिप्रेसिव साइकोसिस में दवाओं का इलाज अनिवार्य है।

२. मेनिया के कारण बहुत अधिक मारपीट व तोड़फोड़ करने के चलते या फिर डिप्रेशन, उदासी के चलते आत्महत्या के विचारों के आने पर रोगी को मानसिक अस्पताल में भर्ती करने की जरूरत पड़ सकती है।

३. मूड स्टेबलाइजर श्रेणी की दवाएँ इस रोग के इलाज के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। इन दवाओं के सेवन से मेनिया व डिप्रेशन दोनों ही मनोदशाएँ दो से तीन हफ्ते में ठीक हो जाती हैं। इन दवाओं के सेवन से रोगी बार-बार दोबारा मेनिया या डिप्रेशन में नहीं जाते और वे सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं।

मनोरोग विशेषज्ञ, कानपुर

(साभार- आपका स्वास्थ्य)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए.

जीवन भर साथ निभाने की कसमें

यूँ तो मनुष्य उच्चतम सभ्यता का जनक होने का अभिमान लिए यह मानता है कि पुरुष और स्त्री एक ही जीवनसाथी के साथ सम्पूर्ण जीवन बिताते हैं। प्रायः 'काम' क्षेत्र में अतिक्रमण करने वाले को पशु कह दिया जाता है। पर आपको आश्चर्य तब होगा जब आप यह जानेंगे कि पशु पक्षियों में भी साथ–साथ जीने मरने की कसमें खायी जाती हैं और अनेक प्रजातियों में एक ही जीवनसाथी के साथ पूरी उम्र बिता दी जाती है।

नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैंः–

तोता (Mealy Amazon) यह तोता एमेजोन में पाया जाता है। यह अपना साथी जिन्दगी भर के लिए बनाता है। जब घोंसले में माँ 26 दिन तक अण्डों को निषेचित करती है तब नर पक्षी उसके व बच्चों के लिए भोजन का इंतजाम करता है। बच्चे पक्षी Hatching के साठ दिन पश्चात् घोंसला छोड़कर उड़ जाते हैं।

वन मानुष (Gibbons) इस प्रजाति के नर और मादा पशु लगभग एक ही आकार के होते हैं। इनके अंदर भी मोनोगेमी अर्थात् पूरे जीवन भर के लिए एक ही साथी बनाये रखने की प्रवृत्ति पायी जाती है और नर तथा मादा पशुओं को प्रायः एक साथ देखा जाता है।

हंस (swan) इस सुन्दर और नयनाभिराम पक्षी के अंदर भी एक ही साथी बनाने का प्रचलन है जो कि प्रायः पूरी जिन्दगी तक चलता है। एक दूसरे के प्रति इनकी वफादारी इतनी प्रसिद्ध है कि 'दो हंसों की गर्दन झुकाकर के तैरने की शक्ल को' जो कि एक हृदय के आकार के अनुरूप हो जाती है, विश्वभर में प्यार का चिह्न मान लिया गया है।

गिद्ध (Black boltures) यद्यपि प्रायः गिद्ध के बारे में यह माना जाता है कि वे खूबसूरत नहीं होते। परन्तु वफादारी में ये बहुत बढ़े चढ़े होते हैं। इसका अर्थ एक यह भी निकाला जा सकता है कि खूबसूरती और वफादारी का कोई सीधा संबंध नहीं है।

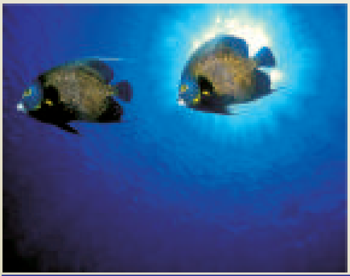

मछली (French angel fish) प्रायः मछलियों के बारे में उनके मोनोगेमस होने की कल्पना भी नहीं की जाती। परन्तु यह छोटी प्यारी मछली शायद ही कभी अकेली रहती है। यह अपने साथी के साथ ही विचरण करती है और जोड़े में ही यात्रा घूमना–फिरना और शिकार भी करती है। साथ–साथ जीने–मरने की कहावत इन छोटे प्राणियों पर पूर्णतः चरितार्थ होती है।

भेड़िये (wolves) भेड़िये क्रोध और हिंसा के पर्याय माने जाते हैं। यह इनका कमजोर पक्ष है। परन्तु इनका पारिवारिक जीवन बहुत मजबूत और मनुष्य से तुलना करें तो वफादारी से भरा हुआ और पवित्र होता है। परिवार जिसमें कि नर, मादा और उनके बच्चे होते हैं प्रायः एक साथ दिखाई देते हैं।

दीमक (Termite) हम देखते हैं कि चींटियों में रानी चींटी केवल एक बार नर से संयुक्त हो पूरी जिन्दगी के लिए गेमिट्स एकत्रित कर लेती है और इस संयोग के तुरन्त बाद नर चींटी मर जाती है परन्तु इससे अलग दीमक में मादा रानी और नर राजा पूरे जीवनभर का साथ बनाते हैं और इनकी पूरी प्रजा वस्तुतः इनके द्वारा ही उत्पन्न होती है।

prairievole इस प्रजाति के चूहे भी अपने एकल परिवार बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। एक ही साथी के साथ मिलकर एक परिवार की तरह चीजों को शेयर करते हैं। घर बनाते हैं और बच्चों को भी बड़ा करते हैं।

Turtle dove ये पक्षी सदैव जोड़े में दिखाई पड़ते हैं और इनकी वफादारी को देखकर इन्हें प्यार और वफादारी का प्रतीक चिह्न माना जाता है। यहाँ तक कि शेक्सपीयर की कविता को भी इनसे प्रेरणा मिली और ये उनकी कविता 'द फीनिक्स एंड द टर्टल' के विषयवस्तु बने।

बाल्ड ईगल बाज (Bald Eagle) यह पक्षी संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय चिह्न हैं और कहा जा सकता है कि नर और मादा के बीच में अगर वफादारी की बात करें तो इनका स्थान उस देश से बहुत ऊँचा है जिसके कि ये प्रतीक चिह्न हैं अर्थात् ये जिन्दगीभर के लिए अपना साथी चुनते हैं।

Albatrosse समुद्र के ऊपर बहुत लम्बी लम्बी उड़ानें भरते हैं। परन्तु इसके बावजूद इनका अपने साथी से जुड़ाव इतना गहरा होता है कि सदैव अपने साथी के पास ही लौटकर आते हैं। इनका साथ जीवनभर का है, ऐसा पक्षी वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है।

अमेरिका में जो तलाक की रेट है उसे देखते हुए यही कहना पड़ेगा कि पशुओं में वफादारी ज्यादा है।

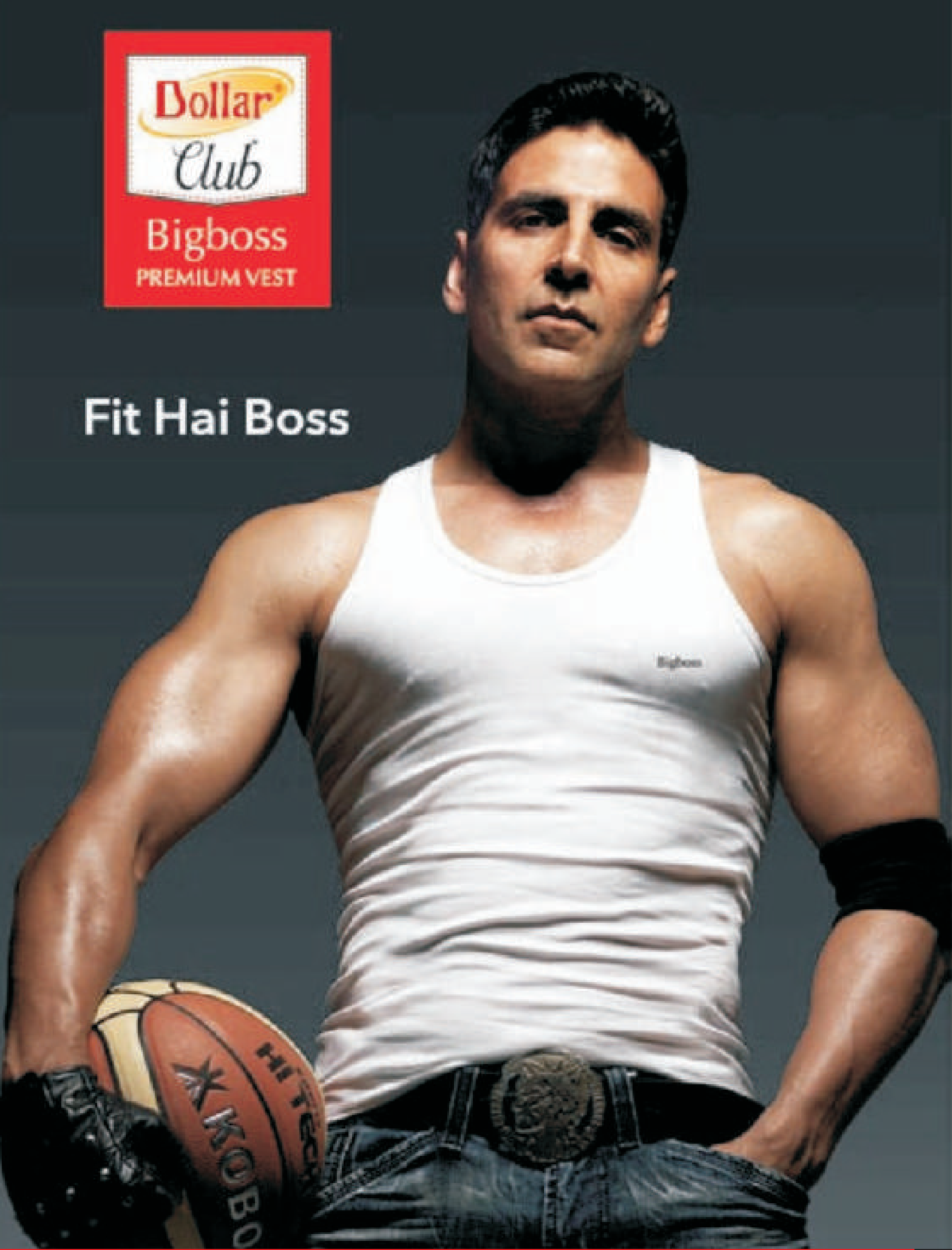
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

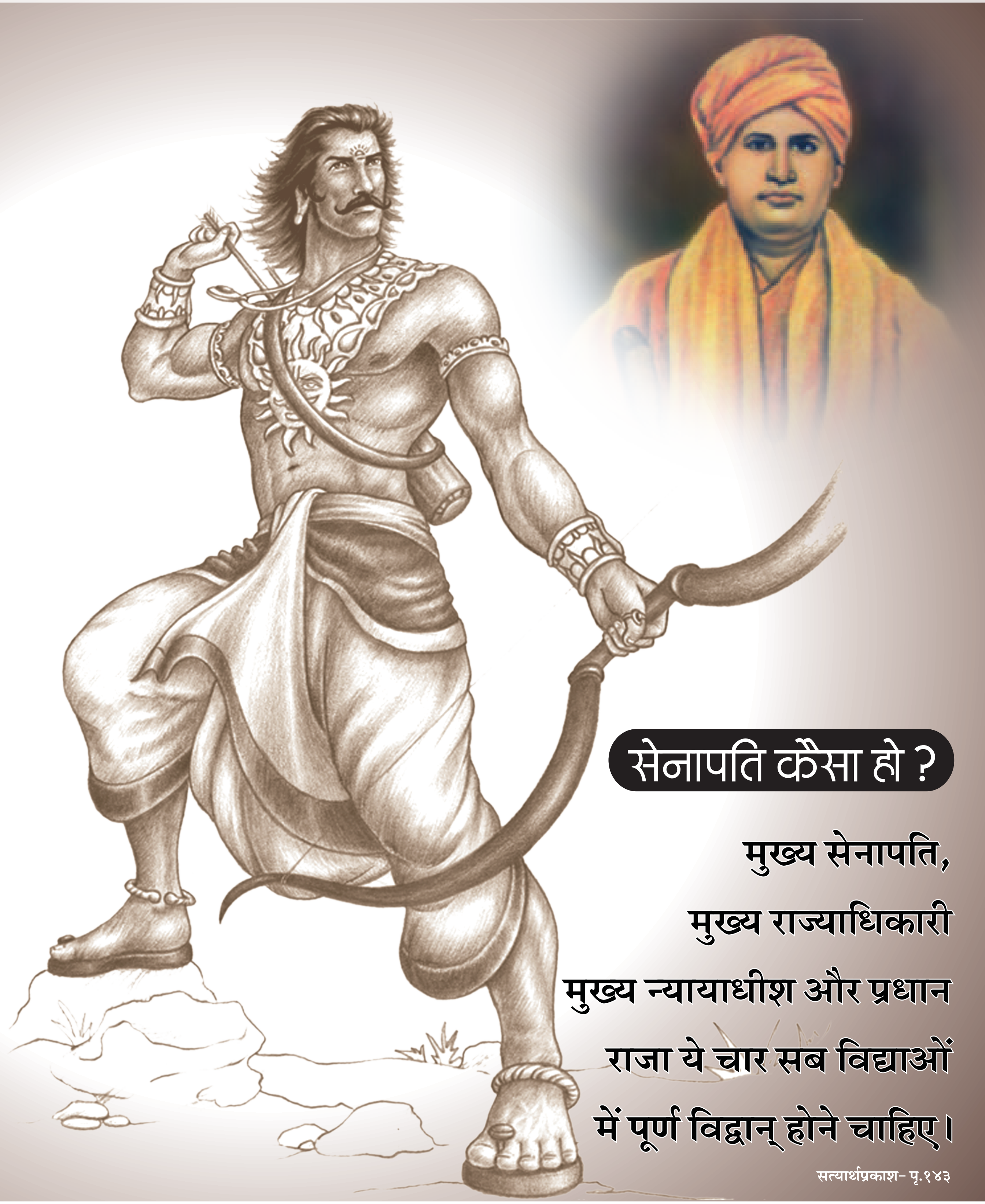

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य